कर्म धर्म का फूस जला री

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मार्च, 1964 में प्रकाशित प्रवचन)

प्रेम एक अथाह समुन्दर है जिसका कोई किनारा नहीं

बेहरे इश्क हेचस्त किनारा नेस्त । ज़ुज जां बिसपारा हेच चारा नेस्त ॥

वहां सिवाय इसके कि हवाले कर दे और कोई चारा नहीं। जो भी प्रेम के मार्ग में जाते हैं, वह जान हवाले ही करके जाते हैं। उसका सिला, फल, कुछ नहीं है। Repose करना कहो, किसी के हवाले करना कहो-

सरे तसलीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आये

यह मार्ग है। और कुर्बान करके यह भी नहीं कहता कि मैंने कुर्बान किया है। समझे। महापुरुषों ने इसकी तारीफ बहुत कुछ बयान की है।

जे तो प्रेम खेलन का चाव । सिर धर तली गली मोरी आव ॥

फिर आगे क्या कहते हैं ?

इत मारग पैर धरीजे, सिर दीजे काण न कीजे ।

फिर यह ख्याल न आये कि मैंने सिर दिया है। परमात्मा प्रेम है। हमारी आत्मा उस जाते हक, प्रभु का कतरा है, यह भी प्रेम का स्वरूप है और प्रभु के पाने का जरिया भी प्रेम है। जितने महापुरुष आये उन्होंने इसी बात को समझाने के लिये यत्न किया है कि हमारी आत्मा को निजी तौर पर, जातियत के तौर पर प्रभु से ही लगन है। क्योंकि कतरा हमेशा समुन्दर का आशिक है। वह कैसे मिलता है ? कतरा समुन्दर से कैसे मिल सकता है ? प्रेम से ही। प्रेम में कशिश है मिकनातीसी। वह खैंचती है। लोहा है, और मिकनातीस है। अब लोहे पर अगर मिट्टी लगी हो तो वह उसको खैंचता नहीं। अगर मिट्टी हटा दी जाये तो मिकनातीस लोहे को खैंच कर अपने आप में जज्ब कर लेता है। तो ऐसे ही वह परमात्मा परिपूर्ण अन्तर और बाहर है। हमारी आत्मा की आत्मा है। वह एक समुन्दर है जिसमें हम तैर रहे हैं। हमारा जीवन आधार है। मगर क्योंकि हमारी आत्मा जिसम और जिस्मानियत में फैल रही है, इसलिए वह इसको कशिश नहीं कर रहा है। जब यह मैटर (जड़माया) से आजाद होगी -

तेरा धाम अधर है प्यारी, तू धर संग रहत बंधानी ।

तो कुदरती बात है, उसमें कशिश है, जो इसको खैंचेगी और अपने आप में जज्ब करेगी। कैसे हम अपने आपको इस बाहरी Materialism कहो, माया के दायरे से कहो, आजाद कर सकते हैं। और कैसे यह खिंच कर उस परमात्मा परिपूर्ण में लय हो सकती है ? इस बात का अनुभव उन्होंने पाया है, महापुरुषों ने, और जो उनके Contact में आये, उसको खोल-खोल कर समझाया ही नहीं बल्कि उसका तजुरबा भी कराया है। किसी महापुरुष की बाणी लो, इसी बात को वह खोल खोल कर समझाते रहे। उन महापुरुषों की बाणियां पढ़ने से हमारे दिल में शौक पैदा होता है कि उन्होंने प्रभु को पाया है हम भी उसको पाये। बस, इतना ही है। आपको यहां पर, पता है, हमेशा ही हर एक महापुरुष की बाणी ली जाती है कभी किसी की, कभी किसी की। हमारी नजर में सब महापुरुष एक हैं, जो उसके Mouthpiece बन गए, वह हमारे सिर माथे पे हैं। वह परमात्मा सब घट-घट में है। जहां प्रगट हो गया, वह बलिहार जाने के काबिल है। हम उसके पास जाते हैं कि महाराज, आपकी आत्मा प्रभु से मिली कैसे, कैसा आपका Contact मिलना हुआ, हमें भी उसका Contact देने में मदद कर दीजिये। बस। बात तो यह है। तो आज आपके सामने स्वयं स्वामीजी महाराज का एक शब्द रखा जाएगा। हमारी गर्ज नफ्से मजमून से है, उन नुकतों से है जो उन्होंने हल किये परमार्थ के रस्ते में आत्मा के प्रभु के साथ मिलाप करने में, उसको समझना है। हमारे सामने अभी बाकी है। तो सत्संग से यही फैज है कि उन महापुरुषों को पूरी तवज्जो और ध्यान से उनके कलामों को सुनो और समझ कर उस चीज को पाने का यत्न करो जिसको उन्होंने पाया है। और उस पाने के लिए जो कुछ समझा है, उसको दिल दिमाग में बिठाओ और उसको हासिल, प्राप्त करने का यत्न करो। तो गौर से सुनिये वह क्या फरमाते हैं। इसमें मजमून है कि वह आत्मा का अनुभव किस तरह से कर सकते हैं ? मजमून बड़ा जरूरी है और उसको पोश महीने द्वारा उपदेश देकर समझायेंगे। सन्तों का बारह मास उच्चारण करने से गर्ज कोई बारह महीने सुनाने से नहीं। उनकी गर्ज अपने आप के Mission से है, जिसके लिए वह दुनिया में आते हैं। उनका काम हमेशा से यही रहा कि परमात्मा से आत्मा को जोड़ो ।

जीय दान दे भक्ति लायण, हर सियों लैण मिलाय ।

हरि से बिछुड़ी हुई रूहों को परमात्मा के साथ जोड़ने का उनका हमेशा से काम रहा। आप इसको गौर से सुनिये। बारह मासे से मुराद उनका उपदेश से है, किसी महीने द्वारा तुम सुनो सही वह क्या कहते हैं ! और बात, किसी महीने के खास सुनने से कल्याण है, न खास कोई

फल है, बल्कि सुनकर उसमें जिस चीज का उपदेश दिया है ना, उसको ग्रहण करो। अगर उसको हासिल कर लिया, तुम्हारा महीना सफल हो गया। अगर उसको ग्रहण नहीं किया, हजारों बार हम महीने सुनते चले आए मगर हम वहीं के वहीं बैठे हैं जहां थे।

वही है चाल बेढंगी जो आगे थी अब भी है

आप गौर से सुनिये कि इस महीने द्वारा वह क्या उपदेश देते हैं।

पोस महीना जाड़ा भारी, कर्म धर्म जियों फूस जला री ।

फरमाते हैं कि पोस का महीना है। पोस में बड़ी सर्दी होती है। सर्दियों में आपको पता है कि गांव के जमींदार लोग क्या करते हैं ? घास फूस का ढेर लगाकर, आग लगाकर वह उससे गर्मी लेते हैं। और फिर जब जल जाए तो राख को उड़ा देते हैं। बहाना महीने का है, सर्दी का है। हम लोगों को सर्दी लग रही है। किस चीज की ? जन्म और मरण की, काम और क्रोध की, लोभ, मोह और अहंकार की। इसमें सब जीव ठिठर रहे हैं। कहते हैं इस सर्दी को हम कैसे दूर कर सकते हैं ? जितने कर्म और धर्म हैं, इनको क्या करो ? ''जियूं फूस जला री''। जैसे घास फूस आदि को जला देता है ना आदमी, ऐसे ही इनको जला दो। कर्म और धर्म। कर्म किसको कहते हैं ? कर्म शख्सी (व्यक्तिगत) कर्म का नाम है, Individual action का नाम है। कर्म जब जमायत या समाज का जो कर्म है ना, वह धर्म बन जाता है, As a samaj समाज के रीति रिवाज से जो एक कर्म थापा जाए कि सुबह उठकर सब मन्दिर में जाओ। वह सबके लिए एक कर्म हो गया ना। यह धर्म बन गया। मन्दिर में जाना धर्म बन गया। पाठ करना धर्म बन गया। Individual action का नाम कर्म और एक सामाजिक तौर पर किसी एक खास कर्म का इकट्ठे तौर पर करना, एक धर्म है। कहते हैं कर्मों और धर्मों से, इनका ताल्लुक किसके साथ है ? जिसम से, शरीर से।

कर्म धर्म करने का मतलब क्या है ? कि हमारे अन्तर में भाव-भक्ति पैदा हो, परमात्मा के लिये। भाई गरीबों की मदद करो। यह धर्म है। भूखों को रोटी दो, प्यासों को पानी दो, नंगों को कपड़े पहिनाओ। यह धर्म है। क्योंकि सबके अन्तर परमात्मा है। खुदी फैलेगी इस लिहाज से कर्म का फायदा हो गया, धर्म के पालने का। मगर खाली पैसे ही देते रहे तो कहां रहे ? हमारा ख्याल कहां रहा ? जिसम जिस्मानियत में रहा। कर्मों और धर्मों का ताल्लुक जिसम से है। हमने प्रभु को पाना है। मुक्ति, परमात्मा के पाने से है। कर्मों धर्मों में नहीं। भगवान कृष्णजी ने गीता में अट्ठारवे अध्याय में, आखिर क्या फरमाया, कि सारे कर्मों धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आओ। पहिले हर एक चीज का ज्ञान दिया है। फिर आखर कहा कि तन मन को छोड़ कर मेरे चरणों में आ जाओ।

तो सबसे हटकर उसके चरणों में प्रीति का पैदा हो जाना, लग जाना, हवाले हो जाना, यह सिर कर्म है, और सिर धर्म है (शिरोमणी कर्म और धर्म) कह दो। तो कहते हैं, जितने अपराविद्या के साधन हैं, कर्मों और धर्मों का ताल्लुक अपराविद्या से है। अपराविद्या के जितने साधन हैं, उनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। तो जो प्रभु को पाना चाहते हैं, जब तक वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आयेंगे, उसको कैसे पा सकेंगे। मैंने इंग्लैंड में एक Talk दी। वहां पर उनको कहा You cannot pray God with hands. तुम परमात्मा की पूजा हाथों से, कर्म इन्द्रियों से या ज्ञान इन्द्रियों से नहीं कर सकते, But with the spirit आत्मा के साथ कर सकते हो। जितने कर्मों धर्मों का ताल्लुक है यह इन्द्रियों से है ना। कर्म इन्द्रियों से। पहिले इससे ऊपर आओ। जला दो से मुराद है ऊपर आओ। इनके करने से गर्ज थी, भाव-भक्ति का पैदा होना, इससे ज्यादा और नहीं। तो वहां एक Reverend (पादरी) थे। उठ कर खड़े हो गए। कहने लगे, With one word of yours you have thrown an atom bomb on all our churchianity. यह लफ्ज कह कर तुमने जितनी हमारी Churchianity है उस सब पर एटम बम गिरा दिया है। कर्म धर्म कहां रह गये ?अपराविद्या के साधनों के करने से मुक्ति नहीं है। जमीन की तैयारी है। इससे काम ले लो। सारी उम्र अगर आप अपराविद्या के साधनों ही में रहे, जिसमें कर्म धर्म सब शामिल हैं। पूजा करो, यह धर्म है। फूल चढ़ाओ, यह धर्म है। तीर्थों पर जाओ, यह धर्म है। सामाजिक धर्म है ना ! नेक-पाक रहो, झूठ मत बोलो, किसी का बुरा चितवन मत करो, यह धर्म है। कर्म और धर्म करने से मुराद जमीन की तैयारी है। इससे काम ले लो। मगर अपराविद्या सारी उम्र करते रहो, मुक्ति को, प्रभु को, नहीं पाओगे। प्रभु को पाने के लिए अपराविद्या चाहिए, आत्म तत्व का बोध चाहिए Self analysis चाहिए, (आत्म अनुभव) चाहिए। आत्म अनुभव करके Self knowledge हासिल करना होगा। मुक्ति का जरिया यही है।

तो हम लोग ज्यादा इन्हीं में लग रहे हैं। इन ही को Be all और End all समझ रहे हैं। इन्हीं से हमें काम लेना था। इनमें मुक्ति नहीं है। इनके करने से क्या होता है ? किस गर्ज के लिये कर्म धर्म किये जाते हैं ? सिर्फ इसलिए कि इन्सान के अन्तर, फर्ज करो, आप ग्रन्थ पोथियां पढ़ते हैं, जाप करते हैं, बाणियों का स्वाध्याय करते हैं। यह धर्म है। पढ़ने से क्या होता है ? उसमें क्या है ? उनमें अनुभवी पुरुषों के जाती, निज के तजरूबात, जो उन्होंने अपने आपके जानने में किये हैं और प्रभु के पाने में किये हैं उनका Fine record उनमें दिया है, किस तरह से किया है, क्या मिला, क्या अनुभव हुआ ? उसके पढ़ने से हमारे दिल में शौक बनेगा, रूचि बनेगी कि उन्होंने पाया, हम भी पायें। सारी उम्र पढ़ते रहे, पढ़ने से शौक बनेगा,

ठीक है, रूचि बनेगी, ठीक ! उनके भाव भक्ति के हालात सुनकर हमारे दिल में शौक आएगा कि हम भी वैसे बन जायें। दूसरे इनके पढ़ने से हमारे अन्तर में खोज होगी, वह क्या करते हैं। अब सामाजिक सिलसिले की तरफ आईए, अपराविद्या की तरफ, कि रोज पूजा पाठ करो। पूजा करने से, बाणियां पढ़ने से, अपना अपना तरीका जो हर एक समाज का है उसके करने से, गर्ज क्या है? कि वह करते हुये हमारे दिल में उस प्रभु के लिए भाव-भक्ति बने। बस। उस परमात्मा के लिए भाव बने। वह भाव-भक्ति से मिल सकता है।

बापन नाहि किसी को भावन को हरि राजा ।

वह किसी के बाप का मोल लिया हुआ नहीं भई । जो उसको भक्ति भा गई उसी का वह परमात्मा है। तो इनके करने से भाव भक्ति तो बनेगी, जमीन की तैयारी होगी, मगर जब तक आत्म तत्व का बोध नहीं होगा, पराविद्या नहीं होगा, पराविद्या नहीं मिलेगी, तब तक जीव का सच्चा कल्याण नहीं। तो अनुभवी पुरुष क्या कहते हैं ? अरे भई, जो तुम कर्म धर्म कर रहे हो, यह जमीन की तैयारी के लिए है। इनसे ऊपर आ जाओ। जब इनसे ऊपर आ जाये, यह करने से शौक बन जाये -

सद साल इबादत कुनद नमाज़ी नेस्त ।

सौ साल भक्ति करते रहो, पूजा पाठ करते रहो, नमाजें पढ़ते रहो, सच्चे मानों में तुम पुजारी नहीं बन सकते। जब तक यह करते हुए तुम्हारे दिल में भाव भक्ति न बन जाए।

कसे को इश्क नदारद खुदा राज़ी नेस्त ।

जिनके अन्तर यह करते हुए प्रभु के लिए प्रेम और कशिश नहीं बनी, यह सब किया कराया फिजूल है। कहते हैं कर्म धर्म करते हुए तुम्हारी सुरत इतनी ऊपर आए, कि उसके, प्रभु के प्यार में जाग उठे। यह कर्म धर्म ऐसे ही रह जायें। समझे। तब ठीक है। हमको यह ख्याल है, हमने शक्ल बनानी है, फूल चढ़ाना है। सुरत तो हमारी बाहर फैल रही है। महवियत में चले जाओ, लीन हो जाओ, हाथ फूल चढ़ाना भूल जायें। रामकृष्ण परमहंस थे। देवी के उपासक थे। फूल तोड़कर लाया करते थे, फूल, चढ़ाने के लिए। जब सूक्षम वृत्ति बनी तो एक दिन तकलीफ हुई, दर्द महसूस हुआ। फूल तोड़ना छोड़ दिया कि यह सारा ही मेरी माता का स्वरूप है। कुदरत ने फूल चढ़ा रखें हैं आगे ही, इनको क्या तोड़ना है। पहुंचना तो वहीं है। कई दफा वह भाव भक्ति में जब गुणानुवाद गाते थे, हाथ यहां हैं तो यहां रह जाते थे, वहां है तो वहां रह जाते थे। जहां पर हों वहीं वह रह जाते थे। कर्मों धर्मों का फायदा है। अगर सारी उमर कवायद ही करते रहे मुआफ करना, जिस गर्ज के लिए वह काम किया था वह हासिल नहीं हुई,वह करते हुए हमारे दिल में उस प्रभु को पाने के लिए दो आंसू नहीं बहे, आंसू उस

तरफ के लिए। ईं-सू नहीं, ईंसू इस तरफ के लिए। इस तरफ के लिए भई देखते हैं, लोग रोज ही रोते हैं, सिर पटकते हैं, चिल्लाते हैं। आँ-सू! उस तरफ के लिए। कितने लोग हैं, जो भाव भक्ति में बैठ कर आंसू बहा देते हैं। तो इसके पैदा करने की गर्ज थी। कहते हैं, कर्मों धर्मों को करते हुए इतने ऊंचे आ जाओ कि इसको सुध न रहे। बैठो याद में, आंखें खुली रह जायें। हाथ यहां हैं, यहां रह जायें। देहध्यास से ऊपर आ जाओ। ऐसा काम करो अगर तुम मुक्ति को पाना चाहते हो। जब तक देहध्यास है, बाहर कर्म धर्म करने का ख्याल तुम्हारे दिल में बैठा है कि तुम कर रहे हो, प्रभु अभी दूर है। दर्जे-बदर्ज चलना है, ठीक। मगर असल निशानी यही है।

तो स्वामीजी महाराज फर्माते हैं कि कर्मों धर्मों से तुम्हारी सुरत ऊपर आ जाये, जैसे घास-फूस जल जाती है ना, क्या रह जाता है ? मिट्टी का ढेर। अगर हवा चल पड़े तो सब मिट्टी भी उड़ जाती है। तो पहले यह करते हुये, इनकी जो गर्ज है, उसको हासिल करो उसको पा कर इतने महव हो जाओ कि सुध बुध न रहे, देहध्यास से Cut off हो जाओ, जिसम से, जिसमानियत से, इसके ताल्लुकात से। तो आगे अब फर्मायेंगे वह कौन सी हवा है जो इस कर्मों धर्मों की घास फूस जो रह जायेंगी जल कर, वह भी न रहे। ज्ञानी को कोई कर्म नहीं। समझे। यही आता है ना। वह नेह कर्म हो जाता है।

जहां ज्ञान तहां कर्मे नासा।

कर्मों का नाश हो जाता है। नेह कर्म हो जाता है। कहते हैं, उसके लिए कि इसका नामों निशान भी न रहे, उसके लिए किस चीज की जरूरत रहेगी ? आगे जिकर करेंगे। गौर से सुनिये।

जल जल ढेर हुआ जब भारी । प्रेम पवन से तुरत उड़ा री ॥

कहते हैं, जब कर्मों धर्मों को करते करते तुम ऊपर आ गए, कहते हैं जो घास-फूस के थोड़े बहुत जो Traces (अंश) उसके आपके दिल दिमाग में हैं रोज-रोज इंसान काम करता है उसका इस पर असर रहता है ना, Habit (आदत) Second nature (स्वभाव) बन जाती है। कहते हैं, वह भी भूसा कैसे उड़ जाए? कहते हैं प्रेम की हवा चलती है। प्रेम किसे कहते हैं?

सांच कह सुन लेहो सबै, जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो ।

दसवें गुरु साहब फर्माते हैं, भाईयो! मैं तुमको सच सच की बात सुनाता हूं कि जिन्होंने प्रेम किया है उन्होंने ही प्रभु को पाया है।

आप देखिए, एक तो जात है। जात। जाते हक। जात के साथ सिफत होती है। सिफत जहां आएगी उसका कर्म बनेगा। कर्म से असर होगा। चार ही दर्जे हैं। सो प्रेम के भी कहो, भक्ति

भाव में भी चार दरजे हैं। मिसाल के तौर पर एक बैटरी है। सर्दी है। आपने बैटरी अपने जिसम के साथ लगा कर रखी हुई है। उसकी गर्मी पहुंच रही है। जब बैटरी खत्म हो गई तो बाहर फेंक दी गई। यह असर समझिये, जब तक किसी चीज का असर पहुंचता रहे,तब तक हमारी लगन रहती है उस तरफ। जब असर न पहुंचे कुछ नहीं। प्रेम कहां रहा ? तो यह दर्जा बदर्जा है। कर्म है, कर्म करके एक घोड़ा, है बड़ा मजबूत है, सवारी का काम देता है, सारे काम करता है, तो खूब तुम उसके साथ प्यार करते हो, बड़ी शाबाशी करते हो। मगर जब वह बूढ़ा हो जाता है, किसी काम न रहे, तो क्या करते हैं ? कसाइयों के हवाले कर देते हैं। बाहर जंगल में छोड़ देते हैं। कर्म करके जब तक वह तुम्हारे काम आता रहा, तुम्हारा प्रेम है। एक नौकर है। वह तुम्हारा सारा काम करता है। बड़ा आज्ञाकारी है तुम्हारा उससे प्रेम है। जब लाचार हो गया किसी को कहते हो भई इसको निकालो। यह भी कोई प्रेम नहीं। इसी तरह किसी इन्सान में कोई गुण है, खुशखती है फर्ज करो, बड़ा अच्छा Handwriting उसका बहुत आला है, आप उससे प्यार करते हैं किसलिए ? कि आपने एक किताब अच्छी लिखवानी है। जब तक लिखता रहे तुम्हारा काम हो, फिर न रहा तो ऐसा प्रेम भी प्रेम नहीं। यह Business और व्यवहार है। एक और आदमी है, वह बड़ा अच्छा गाना गाता है। उसकी आवाज बड़ी सुरीली है, बड़ी कशिश वाली। उसके साथ भी तुम्हारा प्रेम है। जब गला उसका खराब हो गया, वह गाने के काबिल न रहा, फिर प्रेम नहीं। तो दुनिया में ज्यादातर प्रेम इसी श्रेणी में आ जाते हैं। जब तक किसी में गुण है, तब तक तुम्हारा प्रेम है। जब उसमें गुण नहीं रहा, बूढ़ा हो गया, नहीं काम कर सका, यह वह, तुम्हारे काम करता है या कुछ फैज पहुंच रहा है, तब तक तुम्हारा प्रेम है जब वह न रहा तब कोई नहीं। दुनिया के प्रेम तो इसी में शामिल हो जाते हैं।

सब कोई अपने ही सुख स्यों लागे, क्या दारा क्या मीत,
जगत में देखी झूठी प्रीत

एक जातियत के (अंश के) लिहाज से प्रेम है,जात से प्रेम है, तुम्हारी आत्मा से प्रेम है। तुम साबत रहो या बीमार रहो, फिर भी प्रेम है, बल्कि तुम मर भी जाओ फिर भी प्रेम है। प्रेम का मतलब यही है। प्रेम का यह मतलब नहीं जब तक कोई काम होता रहा ठीक, जब तक तुम्हारी गर्ज पूरी होती रही ठीक। तो यह आत्मिक जो प्रेम है ना, जब तक प्रेम आत्मा में नहीं जागता कि करने वाला भी ना जाने कि मैं क्यों प्रेम करता हूं ? बेअख्तयार करता है । गरीबी अमीरी का सवाल नहीं। उससे तुम्हारी गर्ज कोई पूरी होती है या नहीं, इसका भी सवाल नहीं है। उसकी आत्मा में कशिश है, मिकनातीसी, तुम खिंचे फिरते हो। क्यों खिंचे जाते हो, यह पता नहीं। तो कशिश दिल में पैदा हो प्रभु के लिये तो काम बन जाता है। जब किसी के साथ जातियत का प्रेम होगा। यह कब मिलेगा ? सवाल यह आता है। अब तुमको उसका रस

मिलेगा याद रखो। आम दुनिया कहती है कि हमारा प्रभु से प्रेम है। भई कैसे प्रेम है। उसको देखा नहीं, उसको सुना नहीं, उसका कोई रस मिला नहीं, प्रेम कहां रहा ? आत्मा को जब तक अनुभव नहीं हो जाएगा ना। उसके साथ Contact नहीं आएगा चेतन हालत में तब तक इसके अन्तर वह कशिश नहीं बनेगी। गुणानुवाद गाने से, ग्रंथों,पोथियों के पढ़ने से, थोड़ी बहुत रुचि बनेगी। मगर प्रेम सच्चे मानों में उसी वक्त आएगा जब उसका रस मिलेगा। रस कब मिलेगा ? जब अनुभव हो जाएगा। जब हमारी आत्मा को उससे Contact होगा तब वह प्रेम जागेगा। तो ऐसे प्रेम की क्या निशानी है ? Love is not love that allows itself to alter. वह प्रेम, प्रेम नहीं है जो उसकी तबदीली हो, उसके साथ वह भी बदल जाए। ना। एक आदमी बूढ़ा है, जवान है, कोई भी है। है आत्मा ! आत्मा का प्रेम है। जिसम जिसमानियत के बदलने से भी वह न जाए। उसको दबा दे कोई, उसको मुश्किल में डाल दे तो भी न जाए। सामने फांसी लटकी हो, उस पर भी चढ़ाया जाए तो सी न जाए।

खुसरो साहब ने कहा, ऐ खुसरो तुझको आज मुबारिक हो। लोगों ने पूछा भई किस बात की तुम मुबारिक दे रहो है ? कहने लगे, मुझे यह हुक्म मिला है कि कल तुमको सरे बाजार (बीच बाजार) कतल कर दिया जाएगा। कहने लगे कि इसमें क्या मुबारिक है। कहने लगे, उसका हुक्म है मुझे यह खुशी है। मेरा उससे प्यार है, मैं उसके हुक्म से कतल किया जा रहा हूं। कहने लगे, भई कोई दर्शन देने का भी वायदा है। कहते हैं -

वायदाए दीदार नेस्त ।

यह भी कोई इकरार नहीं, कोई Business थोड़ी है ? ब्योपार ! बनिये की दुकान थोड़ी है ? यह तो देने का मार्ग है भई, हवाले करने का मार्ग है जो हवाले कर सकता है, वह सबसे बड़ा प्रेमी है। जब देना ही देना हो हम देवते बन जायें। दुनिया सुखी हो जाये कि नहीं ? हम देवतों की जगह लेवते बने खड़े हैं। हम यह देखते हैं हमें क्या फैज़, लाभ, मिल रहा है। यह थोड़ा है, यह नौकर है, यह रूपया है,यह मकान है यह दोस्त है, यह मित्र है, इससे मुझे क्या मिल रहा है ? कशमकशे होंगी। जब लेने का सवाल नहीं रहेगा या तुम्हें उससे कुछ हासिल नहीं होगा, प्रेम नहीं रहेगा। इसका नाम प्रेम नहीं इसका नाम बनिया-पन है। तो कहते हैं, प्रेम का जागना निहायत जरूरी है। प्रेम के जागने से कशिश बनेगी ना। बे अखत्यार खिंचे रहोगे। अब यहां पर अकल जो है ना, वह भी नापने का पैमाना है याद रखो। माया किसको कहते हैं, मा+या =मा, मापने को कहते हैं। या, मंत्र को कहते हैं, जो नापने का आला है, उसका नाम माया है। उसी का मापना है, उसी का नाम बुद्धि है। जब तक यह मापने वाला यन्त्र, यह भी स्थिर नहीं हो तब तक आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता। उपनिषद क्या कहते हैं ? ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।'' देखिये

हम कहां बैठे हैं ? तो हाफिज़ साहब ने फर्माया है -

अक्ल गरदानीद अज दिल दरबन्दे जुल्फ़ ।
चूं गिरफ्तार अस्त चूं खुश अस्त ।।

कहते हैं, अक्ल को यह पता लग जाए कि मेरा दिल उसकी जुल्फ, याद में कैसे बन्द है, खिंचा फिर रहा है, तो वह क्या करे ?

आकिलां दीवाना गरदद अस्त मये जिन्दगीये मा

''आकिलां दीवाना गरदद।'' वह अक्लमंद लोग पागल हो जायें, इस लुत्फ को पाकर जो मुझे मिल रहा है। इसके बन्धन में आकर, जिन्दगी में फंस कर कहने लगे वह दीवानवार कहे कि हमको भी दो, हम भी लेंगे। अक्ल पर खुदी है। मैं और तू का सवाल है। वह मापने का पैमाना है। जहां यह नहीं रहेगी, स्थिर होगी, वहां पर कशिश बनेगी, प्रेम जागेगा, प्रभु का साक्षात्कार होगा। तब हो सकेगा वैसे नहीं। तो सब महापुरुषों ने इस बात पर बल दिया है। अब सवाल यह आता है कि इस तरफ कौन जा सकता है ? प्रेम के मार्ग में कौन जा सकता है।

बर दरे मैखाना रफतन कारे यकरंगां बवद ।

दोरंगे लोगों का काम नहीं, यकरंगों का काम है। जबान से और दिल से नहीं भाई, जबान और दिल दोनों ही तरजमानी करें एक दूसरे की, यह यकरंगों का काम है, इस तरफ ।

खुद फरोशांरा बकुए मै फरोशां रा दिहन्द

जहां पर यह प्रेम की शराब मिलती है, नशा मिलता है। प्रभु के नाम का। कहते हैं उस गली में जो अक्लमन्द लोग हैं, उनको कोई रास्ता नहीं मिलता। जो बिक जाते हैं अपनी गर्जों के लिए, वह नहीं जा सकते। जब कभी वह आते हैं न, वह क्या मांगते हैं ? अरे भाई हमें भी एक प्याला दे दो। तुम शराबखाने में जाते हो नहीं, जहां नशा मिलता हो, कहते हो, एक प्याला दे दो, बातचीत मत करो, अब देने की करो। जब अनुभवी पुरुष के पास जाओ तो कहो, महाराज दो अब हमें ज्ञान-ध्यान को किनारे रहने दो। वह बहुत सुनी, किताबें पढ़ पढ़ के धो डाली। उसमें नहीं, उसकी आँख में नशा है। उसकी आत्मा में कशिश (आकर्षण) है। वह खीचती है। कि महाराज एक प्याला दे दो। बस हमें और कुछ नहीं चाहिये। बात-चीत अब खत्म करो अब इनकी जरूरत नहीं।

तो प्रेम एक ऐसा मार्ग है। प्रेम होने से उस तरफ को जाया जा सकता है। प्रेम ही एक वह मजदूरी है जिसको पाकर प्रभु मिलता है। नामदेव थे। उनके घर के मकान में छज्जा था, वह टूट गया। घरवालों ने कहा, भई तरखान को बुला लाओ ताकि इसको बना दे। उन्होंने कहा बहुत अच्छा।एक दिन गए, दो दिन गए। गए, याद में बैठ गये। उसका (छज्जे का) ख्याल न

रहे। याद रखो जो महवियत में होते हैं ना, उनको अपनी याद, सुध-बुध नहीं रहती। उसी नशे में चूर है। शाम हो गई। आए। ओ हो याद नहीं रहा। घरवालों ने कहा क्यों भई ? कहने लगे याद नहीं रही, कल लायेंगे। कल का परसों, परसों का चौथे, कई दिन गुजर गए। आखर घरवाले बड़े तंग तुर्श हो गए। मकान का छज्जा गिरा पड़ता है, रोज-रोज इकरार करते हो, कभी पूरा नहीं करते। बात क्या है ? कहने लगे, भई आज तो जरूर लाना होगा। कहने लगे हां जरूर लायेंगे। नहीं तो बुरी गति होगी। कहने लगे बहुत अच्छा। आ गए, फिर भूल गए। आशिक को खुदा की मार !

खुदा की मार दुनियां की तरफ से, सच्चे प्रभु से नहीं। गए। फिर उसी याद में बैठ गये। भगवान ने देखा, मेरा भक्त आज बड़ी मुसीबत में गिरफतार होगा। वह बेड़ी की (तरखान की) शकल बना कर आ गये। पूछा, नामें का मकान कहां है ? यह है ! छज्जा बना गये। अब ऐसा छज्जा जो खुदा के हाथों से बना हो, क्या कहना उसका ! बड़े जल्दी, थोड़े से वक्त में बना कर चले गये। शाम को वह उठे, फिर ख्याल आया, ओ हो ! आज तो बड़ी बुरी गति होगी। आये, दूर से देखा, छज्जा बना पड़ा है। आँख समझ गई।

जबाने बुलबुलां दानद कि मी दानद ।

बुलबुलों की जबान बुलबुल समझती है। पहचान गये कि मेरा भगवान काम कर गया। शेर बन गये। लोगों ने पूछा, भई तुमने जो आज तरखान भेजा, बेड़ी भेजा बड़ा लायक है। क्या मजदूरी लेता है ? कहते हैं -

बेड़ी प्रीत मजूरी मांगे

प्रेम की मजदूरी मांगता है भई। कहने लगे, अच्छा, अगर हम उसको बुलाना चाहें तो वह आयेंगे ? कहते हैं, हां जरूर ! कहते हैं, कब ? कहते हैं, जब ''कुल कुटम्ब सकल ते तोड़े तो हमारे बेड़ी आवे हो।'' जब सब तरफ से, तुम्हारा अन्तर का रिश्ता टूट जायेगा, तो वह आ जायेगा। इन रिश्तों ही ने तो हमको उससे दूर फेंक रखा है। तो यह चीज कब मिलती है ? जब सब तरफ से हटे। जैसे मैंने पहिले मिसाल अर्ज की, एक लोहे का टुकड़ा है। उस पर मिट्टी लग रही है। मिकनातीस का पहाड़ साथ बैठा है। समझे ! मिकनातीस का पहाड़ साथ है, वह उसको खैंच नहीं सकता। समझे। अगर वह मिट्टी उससे उतर जाये, बेअखत्यार खिंचा चला आयेगा। तो इसी तरह हमारी आत्मा पर जो जिसम जिस्मानियत Materialism की जो लगी पड़ी है मिट्टी, यह अगर हटे तो वह ताकत तो अन्तर ही बैठी है। खींचती है। खिंच जाती है। इन इन्द्रियों का बंधन छूट जाता है। देहध्यास से ऊपर आ जाता है, Body-cosciousness को Transcend कर जाता है। उसमें एक नशा है, खुमार है, जो कभी उतरने वाला है।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात ।

यही शम्स तबरेज साहब ने फरमाया -

साकिया शराबे हक बरदार शराबे रा ॥

कि उस मालिक का जो नशा है ना, उससे हमें भी थोड़ा एक प्याला दे दो। कहते हैं, वह नशा कैसा होगा ? कि वह जो कबाब हुये दिल हैं, उस प्रभु को पाने के लिए उनको मल्हम का काम कर जायेगा, नशा दे जायेगा। उस नशे की क्या तारीफ की एक जगह हाफिज साहब ने-

खुमे दो हजार बादा न खद ब जुराये तो ।

कि दो हजार शराब के मटके भरे हों, कहते हैं उन सारो को पी लो, फिर भी इतना नशा नहीं आयेगा जितना एक घूंट तेरा बख्शा हुआ है। आखर वह कुछ नशा है, जिसको पाकर, थोड़ी सी झलक जिसकी पाकर लोग दुनिया की तरफ से लातें मारते हैं, बादशहतों को छोड़ जाते हैं, सब तरफ से किनारा कर जाते हैं ।

हजरत इब्राहीम अधम थे। उनके दिल में जब उसका, हकीकत का इजहार हुआ, बादशाही छोड़कर चले गये। कई सालों के बाद अपने मुल्क में गये, फारस में। दरिया के किनारे बैठे थे। लोगों को पता लग गया कि बादशाह वापस आ गये। गये वजीर, अमीर, कि महाराज चलो। कहने लगे, नहीं, अब मैं नहीं चलता। उसमें क्या धरा पड़ा है ? उन्होंने बहुत सारा जोर दिया कि नहीं आपको चलना चाहिये। तो क्या किया एक सुई से कपड़े सी रहे थे। वह दरिया में फेंक दी और कहने लगे, इस सूई को ले आओ। कहने लगे, जी दरिया से सुई कैसे निकले ? कहने लगे, नहीं यही सुई चाहिये। कहने लगे महराज जितनी सुईयां कहो हम पैदा कर सकतेहैं। कहते हैं, नहीं। थोड़ी सी तवज्जो दो, एक मछली मुंह में सुई पकड़े हुए आ गई। कहने लगे देखा ! मैं तुम्हारी बादशाही का क्या करूं ? मैंने ऐसे बादशाह की गुलामी ली है, जिसके इशारे पर चरिन्द, परिन्द, हैवान (पशु, पक्षी) जितनी कायनात (सृष्टि) है,यह चलती है, वह कुछ नशा है आखर जिसको पाकर, निज आनन्द करके ब्यान किया है, जिसको आनन्दमय करके बयान किया है। शम्स तबरेज साहब ने उस नशे को बयान करते हुए कहा-

ईं खाके मन अगर गन्दम बरायद

कहते हैं मैं मर जाऊं, मेरे जिसम की खाद से, जिस मिट्टी में यह दबा दी जाए खाद में डाल दी जाये, उससे जो कणक उगे, गेहूं उगे -

अर्जी गर ना पर्जी मस्ती फजायद

अगर उसकी तुम रोटी पका लो, तो मस्ती बढ़ेगी ।

उसके परोसने वाला और पकाने वाला मस्त हो जाएगा। जिस तन्दूर में वह रोटी पकेगी, उसमें आनन्द की ध्वनियां निकलेंगी, मस्ती देने वाली। तो प्रेम, यह प्रेम के नशे का बयान है। जब जात हमारी उस जाते हक में वासिल होती है, (आत्मा, परमात्मा में लय होती है) हम चेतन स्वरूप है, Conscious entity हैं जो मन-इन्द्रियों के घाट पर घिरे पड़े हैं। इससे Liberate (आजाद) होकर, हम अपने आपका अनुभव करके Overself (प्रभु) से Contact करते हैं । उसमें जो मस्ती मिलती है, उसका जिकर है। तो कहते हैं जब वह आ जायेगी, जिसम जिसमानियत से ऊपर, तो कर्म धर्म कहां रह जायेंगे ? मत्था टेका ! टेकते हुए महवियत में चले गये। अब उठना भूल गया।

रामकृष्ण परमहंस थे। जब पूजा करते-करते मस्ती में आते थे, हाथ खड़े रह जाते, आंखे खुली रह जाती मुंह खुला रह जाता। देहध्यास न रहकर महवियत के आलम में चला जाता। देहध्यास न रहकर महवियत के आलम में चला जाए Consciousness (चेतनता) महान् Consciousness में जाग उठे। कहते हैं, यह अवस्था बन जाये। यह कैसे आयेगी ? जब आपके अन्तर प्रेम, भक्ति भाव बढ़ेगा। कर्मों धर्मों से हमने फायदा उठाना है। यह Elementary steps हैं, अपराविद्या के साधन जमीन की तैयारी के लिये हैं। इनसे फायदा उठा लो। इनके करने से जब भाव-भक्ति बढ़े Inner contact मिले, उस नशे को पाओ, फिर इतनी महवियत के आलम में रह जाओ कि इनका नामो-निशान भी न रहे।

मोह सीत न चित को घेरा । सूर विवेक किया घट फेरा ॥

कहते हैं, इस वजह से दुनिया सारी ही मोह के फंदे में फंस रही है,क्योंकि जिसम का रूप बनी बैठी है। आत्मा हमारी, मन के आधीन है। मन-इन्द्रियों के भोगों के घाट पर। यह जिसम का और जगत का रूप बनी बैठी है। हमको जिसम का इतना प्यार बन चुका है, मोह बन चुका है, कि जरा बीमार हुए, हम मर जायेंगे ! हम दूसरों से, बाल-बच्चों से, इतना Idenfify होते हैं, जरा वह बीमार हों,जान हमारी जाती रहती है। कहते हैं यह मोह की सर्दी सारे जहान को लग रही है। इसको कैसे दूर कर सकते हैं ? कहते हैं विवेक से !

विवेक किसको कहते हैं ? Discrimination सत्य और असत्य का निर्णय करने का नाम विवेक है । तो विवेक से काम लो। जो सत्य है उसको ग्रहण करो। जो असत्य है, उससे मुंह मोड़ो। सत्य किसको कहते हैं ? जो हमेशा एक-रस रहे Unchangeable permanence (अटल अविनाशी) जो हस्ती है, ''आदि सच, जुगादि सच, है भी सच नानक होसी भी सच''। और असत्य क्या है ? जो एक रस न रहे।

साधो इह तन मिथ्या जानो, या भीतर जो राम बसत है,
साचा ताहि पहचानो ।

यह तन पांच तत्व का बना हुआ है। Matter is changing सारा जगत ही पांच तत्वों का बना हुआ है, यह भी बदल रहा है, एक रस नहीं, हमारा जिसम और सारा जगत बदल रहा है। यह Matter का बना है। आत्मा Unchangeable है। अब विवेक से इसको अगर Analyse करके, यह जिसम को चलाने वाली शक्ति है आत्मा जिसको कहते हैं, सुरत जिसको कहते हैं, जो जिसम को जीवन्त कर रही है, Animate कर रही है, Enliven कर रही है, उसको Anlyse करके, जब उस चेतन को अलेहदा करोगे, Body consciousness से ऊपर आ जाओगे, तो सही मानों में विवेक की सिद्धि हो जाएगी। हम इस वक्त एक बड़े भारी धोखे में जा रहे हैं। एक बेड़ी जा रही है, दरिया में। उसमें कई आदमी सवार हैं। बेड़ी उस तरफ जा रही है, जिस तरफ दरिया बह रहा है। बेड़ी और दरिया के पानी की रफ्तार एक सी है। एक आदमी उस बेड़ी से बाहर खड़ा हो जाता है। वह देखता है, बेड़ी बह रही है, उस तरफ जा रही है जिस तरफ कि दरिया का पानी बहता जा रहा है। वह हमदर्दी से कहता है, भाईयों ! तुम बह रहे हो। वह कहते हैं अरे भई तुम क्या कहते हो ? वह गिर्दागिर्द देखते हैं, अपनी बेड़ी को भी देखते हैं, पानी को भी देखते हैं। बेड़ी भी खड़ी मालूम होती है। पानी भी खड़ा मालूम होता है। जब दो चीजें एक ही रफतार से जा रही हों, तो वह खड़ी मालूम होती हैं। यह धोखा है। जिसम बदल रहा है। जगत बदल रहा है। शास्त्र कहते हैं, जगत असत है, आत्मा सत है। सब महापुरुष यह कहते हैं यह जगत ऐसा है, ''ज्यूं बालू की भीत।''

जैसे रेत की दीवार है भई। यह खिन्ड रही है, गिर जायेगी, मगर हमें क्या यकीन आता है? नहीं ! क्यों ? हम बड़े भारी धोखे में जा रहे हैं। आलम भी और बेइलम भी, अमीर और गरीब, हाकिम और महकूम एक ही बेड़ी में बहे चले जा रहे हैं।

तो कहते हैं, यहां विवेक से काम लो भई ! तुम देखते हो आंखों से, ऐसे ही जिसम हमनें कई बार, जब इसमें से चलाने वाली शक्ति निकल जाती है, हमने कन्धों पर उठाये हैं, और शमशान भूमि में पहुंचा कर अपने हाथों से दाग दिये हैं। फिर भी हमको यकीन नहीं आता कि हमने भी यह जिसम छोड़ना है। कभी आपको आया यह ख्याल क्या ? नहीं ! यह चादर ओढ़े हुए बरसों हो गये, किसी को पांच साल, किसी को दस साल, किसी को बीस साल, किसी को इससे ज्यादा, मगर क्या कभी यह ख्याल आया कि यह क्या है ? हड्डियों के टुकड़े हैं। Ligament से सी कर, ऊपर चमड़े का खोल चढ़ा दिया है। अरे भई तुम इसको पहिन रहे

हो। यह खिस जायेगी अपना वक्त पाकर। अगर इस पर पापों की मैल खुद चढ़ाओगे तो यह जल्दी खाई जायेगी। कभी हमनें इसकी तरफ तवज्जो दी है ? कभी ख्याल तक भी नही आया। यह क्या है, जो जिसम हम लिए फिरते हैं ?

तो विवेक से काम लो भई। सत कौन सी चीज है ? असत कौन सी चीज है ? तुम यह मकान हो, या इस मकान के मकीन (निवासी) हो ? यह एक सराय है, जिसमें तुम रह रहे हो। आखर खाली करनी पड़ेगी। यह Best use इसका करना था। मनुष्य की जो काया है यह सब योनियों से सरदार योनी है। इसमें तुम्हारा काम भी सबसे बढ़ चढ़ कर है। क्या तुम अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आजाद करके अपने आपको जान कर प्रभु अनुभव को पा सकते हो ? यह केवल मनुष्य जीवन ही में तुम कर सकते हो। यह Golden opportunity है।

यह तो समय मिला अति सुन्दर, शीतल हो बच घाम से ।

बड़ा आला, सुनहरी वक्त मिला है ।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, ऐहला जन्म गंवाया ।

अगर मनुष्य जीवन पाकर इसने आत्म अनुभव और परमात्म अनुभव को नहीं पाया, मनुष्य जीवन बर्बाद चला गया। एक बार यह हाथों से निकल गया, फिर या नसीब कब मिले। पोड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, ऐहला जन्म गंवाया । तो कहते हैं विवेक से काम लो भई। सत असत् का निर्णय करो। वेद भगवान में क्या तारीफ आई है, कि हे भगवान ! हे मालिक ! हे प्रभु! हमको असत से सत की तरफ ले चलो। Lasting (अविनाशी)चीज के साथ अगर जुड़ जाओगे, न वह फना होगी, न तुम्हारी सुरत उखड़ेगी, न तुम दुखी होओगे।

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले

जो हमेशा के सुख को चाहता है, वह परमात्मा परिपूर्ण जो जर्रे जर्रे में समा रहा है, रम रहा है, उसके साथ जुड़ जाओ, वह फना से रहित है। यह विवेक का काम है कि दुनिया जो मोह के बन्धन में बंध रही, इससे आजादी का तरीका क्या है ? विवेक ! विवेक का सूरज चढ़े सर्दी सब जाती रहती है। छोटे बड़े सबको, हरेक को जिसम प्यारा है। हर एक को अपने ताल्लुकात प्यारे हैं। अगर विवेक का सूरज चढ़ आयेगा, जैसे सूरज के चढ़ने पर सर्दी नहीं रहती, ऐसे ही विवेक के जागने पर मोह नहीं रहेगा। अरे भई, यह मिट्टी का ढेर है।

मेरे भाई थे। जब उन्होंने जिसम छोड़ा, तो हमारे हजूर आये बाहिर तो मैं उनके साथ था। मैंने कहा यह खाली मकान पड़ा है, रहने वाला इससे जा चुका है। बात तो असल में यही है,

मगर Analyse करके खुद देखा हो, तब। बुद्धि विचार भी खाली काम नहीं करती, क्योंकि जिस Level से वह काम कर रहा है ना, जिसम जिसमानियत के Level से, वह बेड़ी का रूप बना बैठा है, जिसम का, इसलिए, असलियत कुछ और है, नजर कुछ और आ रही है। आंखों से देखता है,मगर इसको यकीन नहीं आता। इससे बढ़कर और आश्चर्य की बात क्या होगी भई ! यक्ष ने युधिष्ठर से पूछा महाराज दुनिया में कौन सी सबसे बड़ी आश्चर्य की बात हो रही है ? कहते हैं, यही कि यह जिसम हम लिए फिरते हैं, इसके चलाने वाली शक्ति इससे निकल जाती है हमारे देखते देखते, हमने कई ऐसे जिसम उठाये हैं, शमशान भूमि में पहुंचाये हैं, और अपने हाथों से दाग दिये हैं, मगर हमें यकीन नहीं आता है कि हमने भी जाना है। इसका नाम है विवेक। पहिले बुद्धि विचार से, फिर Self-analysis से। जब सचमुच तुम पिण्ड से ऊपर आने लग जाओगे, अब तो बुद्धि का विचार है, मन और बुद्धि से कई बार हम यह कहते हैं कि हम तन नहीं, मन नहीं, बुद्धि नहीं, इन्द्रियां नहीं, प्राण नहीं, मगर जब तक रुह का Self analysis न हो, पिण्ड से ऊपर न आये, चेतन अलेहदा न हो, जड़ और चेतन की जो ग्रन्थी बन्धी पड़ी है, जब तक यह हम खोल न लें, तब तक सही मानों में हम जिसम के Level से ही दुनिया को देखते रहेंगे। जब आत्मा इससे ऊपर आयेगी जिसम जिसमानियत से, देहध्यास उड़ जायेगा, आप देखोगे कि यह मिट्टी का ढेर है। आपके देखने वाली आँख का फिर आत्मा का Level बन जायेगा। सारा जहान का नक्शा बदल जायेगा। दुनिया जो मोह के बन्धन में बन्ध रही है, कहां जाती है ?

जहां आसा तहां बासा

अगर उससे आजाद होना है तो आत्म-तत्व का बोध करो, सत की तरफ रजू करो,असत से मुंह मोड़ो। बस। हकीकत तुमसे दूर नहीं, तुम उससे दूर नहीं। तो मोह की सर्दी जो दुनियां को ठिठरा रही है, उससे बचना चाहते हैं, तो विवेक का सूरज चढ़ाओ। उससे यह जाड़ा नहीं लगेगा। Theory precedes practice पहले बुद्धि विचार से समझो बात क्या है, फिर Practically इस जिसम रूपी बेड़ी से ऊपर आ जाओ। सारा नकशा ही और बदल जायेगा।

फेरा करत भक्ति गुरु जागी, सुरत भई अनहद अनुरागी ।

कहते हैं, यह हालत देख कर, जब Changing panorama देखेगा, अनुभव करेगा, एक तो बुद्धि द्वारा है ना, उससे भी Inferences (परिणाम) निकालेगा, फिर Practically इससे ऊपर आकर देखेगा वाकई दुनिया की यह हालत है तो वह क्या करेगा ? जिन्होंने इस Mystery of life को हल किया है वह उनके पास जायेगा। वह उसको हल करने का कोई समान करेगा।

आपको पता हो कि महात्मा बुद्ध को कौन सी चीज थी, जो आखर महात्मा बुद्ध बना दिया। यही एक नजर थी। सैर को शहर में गए। रथ में सवार थे। उनकी आमद (आगमन) के लिए लोगों ने बड़ी आरायशें (सजावटें) बड़ी सजधज बनाई। जाते जाते आगे देखा कि एक बूढ़ा आदमी लकड़ी के सहारे आ रहा है, लड़खड़ाता हुआ। कमजोर है, दुर्बल है, चल नहीं सकता है। देखा, पहिली बार यह दृश्य सामने देखा, सारी उम्र में। जवान थे। पूछा यह क्या है ? रथवान ने कहा, महाराज यह शरीर बूढ़ा हो जाता है, दुर्बल और लाचार हो जाता है। चोट आई दिल को। आगे गये। एक बीमार था, हाँक रहा था, सांस नहीं निकल रही थी। कहने लगे यह जिसम बीमार हो जाता है। दिल में बड़ी सख्त चोट लगी कि ऐसी सुन्दर काया का यह हशर, परिणाम होगा ?

रथवान ने यह देखकर कि इनके दिल को बजाय खुशी के लिये आये थे उल्टा दुःख हो रहा है, शहर से बाहर निकलें, न कोई दृश्य देखने में आये न यह दुःख बढ़े। बाहर निकले तो चार भाई एक मुर्दा लिए जा रहे थे। पूछा यह क्या है ? कि महाराज यह जिसम छोड़ना पड़ता है। हैरान ! कौन सी चीज है, जो इस जिसम से चली गई ? क्या आपने कभी विचार किया ? तो बात बड़ी मामूली है। क्या तुम आंप इस वक्त Analyse कर सकते हो ? वह कौन सी शक्ति है जो इसको चला रही है ? क्या इससे आप Analyse करके इससे ऊपर आ सकते ? Majority ऐसे आदमियों की होगी जो नहीं जा सकते हैं। बुद्धि विचार से बहुतेरे ज्ञान ध्यान छांट सकेंगे, मैं तन नहीं, मैं मन नहीं, मैं बुद्धि नहीं, मैं इन्द्रे नहीं, मगर पिण्ड से ऊपर आकर Transcend करके इसका अनुभव, Firsthand experience करना बहुत थोड़े लोग ऐसे मिलेंगे। तो महात्मा बुद्ध ने घर-बार छोड़ा। उनके यहां लड़का पैदा हुआ था उसी रात, मगर एक Mystery of life का सवाल सामने आया, अरे भाई यह क्या हशर (परिणाम) हो रहा है आत्मा का ? कौन सी चीज है जो इन Poles को चला रही है ? उसका Contact (ताल्लुक) Higher self (परमात्मा) से क्या है ? दुनिया का नक्शा ही बदल जाता है भई। आप अलैदा-अलैदा Individual units हो कि नहीं ? हर एक को एक चीज चला रही है, उसके पसेपुश्त आधार एक Unseen hand (अदृश्य सत्ता) है जो सबको आधार दे रहा है। जब यह सत्ता खैंची जाती है, इस जिसम से आत्मा जुदा हो जाती है, चार भाई इस जिसम को उठाते हैं, शमशान भूमि में पहुंचा देते हैं। कहते हैं, यह क्या हशर हो रहा है ? जंगलों में गये। आखर हकीकत को पाया है। फिर जिसको पाया है उन्होंने लोगों को समझाया है ।

तो मेरे अर्ज करने का मतलब यह है कि यह काम विवेक से होगा। जब यह हालत हो फिर मोह, Attachment नहीं रहेगी तुम्हारे अन्तर आत्मा में, और उस प्रभु का प्यार जागेगा। अनुभव होगा, Change होंगे। वह परमात्मा सबमें रम रहा है। सब आत्मा उसकी अंश है।

कहो कबीर एह राम की अंश

सब Conscious entity हैं। Innate (जाति भाव से) प्यार पैदा होगा लोगों से, जो मिटाने से भी नहीं मिट सकेगा। कहते हैं, यह काम विवेक से होगा। इस बीमारी में सारी दुनिया ही गिरफ्तार है। उसका इलाज यही है। जब विवेक जागेगा। कर्मों धर्मों से, यह Elementary steps हैं, इनको करते हुए, जिस गरज से यह प्रभु के पाने या अनुभव करने के लिए यह सब चीजें बनाई गई थी उसकी महवियत में जाकर यह Standstill (स्थिर) हो जायें।

रोग भोग सब दूर निकारा,
विमल विरह बैराग सम्हारा ।

कि अन्तर में सच्चा बैराग बन गया। जब Unattachment होगी ना, जिसम जिसमानियत से ऊपर हो जाओगे, हर एक Value of life बदल जाएगी। जिसम की अपनी कीमत, दुनिया के सामानों की अपनी कीमत, बुद्धि की अपनी कीमत, आत्मा की अपनी कीमत, सारी चीजों का नजरिया बदल जायेगा। Values of life का सवाल होगा। तो सच्चा बैराग बनेगा। अरे भई यह जिसम और ताल्लुकात, यह वह, जितने सिलसिले हैं, यह Mediums (साधन) है। इनका हमने Best use करना था।

गुजारे मात्र बरतो इन मांहि

यही हमारा दीन ईमान बन चुका है। जिसम के साथ घरेलू हालात, जिसम के साथ सामाजिक हालात, जिसम के साथ Political (राजनैतिक) सवाल, काम करता है, Self expand करती है। अपने से घरों का प्यार है, Self expand (अहं भावना विस्तृत) हुई, ज्यादा फायदेमन्द है। इसमें भी दुख है। घराने लड़ते हैं। साथ के भूखे मर जायें वह परवाह नहीं करता Self expand और बढ़ी, Expand हुई, समाज तक Expand हो गई। अपनी समाज प्यारी है। दूसरों की समाजों से कशमकश है। पाकिस्तान बना, दस लाख आदमी उसकी भेंट हुए। उसके आगे और Self expand की देश भक्त बन गए Patriot बन गये। हमारे मुल्क का कुत्ता दूसरों के मुल्क के इंसानों से अच्छा है। नतीजा ? Wars हुई Great wars आगे परमात्मा दया करे ! एक दूसरे से Expand की Self, बड़ी अच्छी बात, करनी चाहिये। मगर फिर भी उसमें दुःख शामिल है। एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर। घरेलू हालात में आपस में एक दो लड़ेंगे, एक आध आदमी मरेगा, कोई जख्मी होगा। समाजों की लड़ाई होगी

तो लाखों बर्बाद होंगे। अगर मुल्कों की लड़ाई हो तो क्या हशर होगा ? सन्त महात्मा क्या कहते हैं, कि तुम्हारी खुदी इतनी फैल जाये कि-

तेरे भाणे सरबत का भला

सारी Mankind (मनुष्य जाति) Creation सारी (सृष्टि) सारी ही उसमें आ जाये। सन्तों का नजरिया हमेशा से यही रहा है। तो विवेक से यह सिलसिला चलता है। मगर विवेक पहिले बुद्धि, Theory चलती है। Theory से जब तक Practical जिसम और चेतन कहो, आत्मा कहो, इसको Analyse करके इससे ऊपर नहीं आता, इसको देखने वाला नजरिया नहीं बनता। Shall और Will के सारे प्लान फेल हो जाते हैं।

आत्मिक Source (स्रोत) कहो या आध्यात्मिक Source कहो या आध्यात्मिक बल कहो, वह कब आयेगा। चेतन को महाचेतन से Enthuse (सजीव) होने ही से आएगा ? जड़-पदार्थों से नहीं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि विवेक के साथ क्या नतीजा होगा ? कहते हैं, हकीकत की तरफ नजर जायेगी। अब इस Mystery को हल करना है, How to do it अब सवाल आया ना। अगर जिसम को छोड़ना ही है तो छोड़ने वाला कौन है ? कहां जाना है ? इस तरफ हमारी तवज्जो जायेगी। तो कुदरती बात है, हम किताबों में ढूढेंगे। किताबों में कई बातें समझ आती हैं, कई नहीं आती। मैं आपको अपना जिकर करता हूं जब मेरे दिल में यह ख्वाहिश पैदा हुई, ऐसे ही एक मरते हुए आदमी को देखा। हैरान था कि कौन सी चीज इससे निकल गई है ? मुझमें बाकी है। मुरदे को लिए जा रहे थे। मैं हैरान था, भई कौन सी चीज इससे निकली है, और मुझ में है। मैं Discriminte (निर्णय) नहीं कर सकता था। वह मुर्दे को जलाने लगे। वहां एक बूढ़ा आदमी भी चिता पर रखा। एक जवान भी रखा। ऐसा सामान बन गया। देखा गया कि मौत से तो छुटकारा है नहीं। यह क्या चीज है जो निकल जाती है ?

वहां पर राय साहब मुन्शी गुलाबसिंह, लाहौर का वाकिया है, उनकी समाधि बनी थी। उसमें लिखा था Inscribed हुआ था, ''अरे जाने वाले तुम किस जोम में जा रहे हो। हम भी तुम्हारी तरह कभी थे'' और चरका लगा दिल को। इसको हल करने के लिए कई किताबें पढ़ी। दो पूरी लायब्रोरियां पढ़ी, धर्म पुस्तकें पढ़ी। उनमें हालात तो दिए हैं, बड़े अच्छे। How to do it ? (कैसे करें ?) यह बात नहीं दी है। जड़ चेतन से अलेहदा करो। जिसम जिसमानियत से ऊपर आओ Transcend करो, Analyse करो, इस बात का तो जिकर आता है। जीतेजी मरो, Learn to die so that you may begin to live ! इस जीवन में एक नया जीवन हासिल करो। इन बातों का तो जिकर आता है। Except ye be born anew, ye cannot see the kingdom of God पढ़ा। मगर How to be born anew ? यह मुईमा था।

इस बात के हल करने के लिए, मरता क्या न करता, कई महात्माओं के पास गया। बाहिरमुखी साधन सब बतला दें। जाओ, किए जाओ। आखर हजूर के चरणों में पहुंचे। बात क्या है ! बैठो। पिण्ड के ऊपर आ गए। चलो खत्म हो गया। तो करके देखने वाली यह बात है। हल करने वाला हो, फिर Angle of vision (दृष्टिकोण) ही दुनियां का बदल जायेगा। तो महापुरुष जब भी आते हैं, इस तरफ हमारी तवज्जो दिलाते हैं, दुनिया के जन्म-मरण की और मोह की सर्दी कैसे दूर हो सकती है ? विवेक से ! ऐसी गति को पैदा करो कि तुम्हे देहध्यास न रहे। इतने Rise above करो। ''मौतू किबलन्त मौतू''। मरो पेश्तर इसके कि तुम मरो। जड़ और चेतन की ग्रन्थी को खोलो।

अब How to do it ? सवाल यह है। कहने को हम Practically हजार बातें कहते हैं, मगर Feelings में करेंगे Inferences निकालेंगे। मगर Seeing is above all अनुभव सबसे ऊंचा है। अब इस मुईमे को आगे हल करेंगे कि यह जो सुरत या आत्मा है, जिसने Overself परमात्मा का अनुभव करना है, वह क्या है ? और यह क्या है ? इसका रूप क्या है ? आगे बयान करेंगे, गौर से सुनिये ।

सहज जोग गुरु दिया बताई, सुरत सबद मारग लखवाई ।

इस Mystery के हल करने के लिए, कहते हैं, तलाश करते-करते मैं अनुभवी पुरुष के चरणों में पहुंची उसने क्या कहा, कि कोई फिकर की बात नहीं भई। सहज मार्ग है, घबराओ नहीं। सहज मार्ग किसको कहते हैं ? जो आसान है, Natural way जो है। जड़ और चेतन जब तक अलेदा नहीं होगी, न अपने आपका अनुभव होगा, न परमात्मा का अनुभव होगा। इसलिए सब महापुरुषों ने इस बात पर जोर दिया है कि Know thyself अपने आपको जानो, Who you are ? what you are ? तुम कौन हो ? क्या तुम यह पांच छः फुट के पुतले हो जो तुम यह लिए फिर रहे हो ? यह तो हम देखते-देखते छोड़ जाते हैं। वह, इसके जो चलाने वाली शक्ति है, वह जो तुम हो, क्या तुम Analyse कर सकते हो ?

अब जिसने हल किया है, उसके पास जब हम पहुंचते हैं तो वह कहते हैं, भई काम तो यही है। योगियों ने भी यही कहा। वेद भी हमें यही कहते हैं, शास्त्र, सब महापुरुष यही कहते हैं, कि जीतेजी मरो। क्राईस्ट ने यही उपदेश दिया, Except ye be born anew, ye cannot enter the kingdom of God. वहां पर एक निकोडिमस नाम का बड़ा आलम फाजल था। वह पूछने लगा, How can we re-enter the womb of the mother to be reborn ? हम माता के पेट में फिर दुबारा जाएं और दुबारा पैदा कैसे हो सकते हैं ? तो उसको

कहने लगे देख निकोडिमस ! तुम बड़े फाजल हो। दुनिया तुमको मानती है। तुम्हारी पूजा करती है। Don't you know that flesh is born of flesh and spirit of spirit ? तो यह आत्मा का नया जन्म है Reborn अवस्था का बनना, जिसम जिसमानियत से ऊपर आना। जब किसी अनुभवी पुरुष के पास जाओगे, वह कहेगा भई घबराओ नहीं। बात Simple है, सादा है। एक बच्चा भी कर सकता है, जिसे बूढ़ा कर सकता है, जिसे आलिम फाजिल भी कर सकता है। सहज योग का मार्ग कहते हैं उसने मुझको बतलाया और कहा कि भई अपनी सुरत को शब्द के साथ जोड़ो। बस। प्राणों को मत छेड़ों। आप देखिए योगियों ने भी यह काम किया है। जड़ और चेतन को अलेहदा किया है। उन्होंने प्राणों को भी साथ समेटा है। देखिए इस जिसम में दो ताकतें काम कर रही हैं। एक आत्मा दूसरे प्राण। दोनों का अपनी-अपनी जगह अलैदा काम है। प्राणों का अपना काम है। Action of breathing सांस चल रहा है, दिन रात सोते जागते। हमें पता नहीं। गिजा हजम हो रही है। यह प्राण कर रहे हैं। हमें पता नहीं खून का दौरा मार रहा है हर वक्त, हमें पता नहीं। समझे ! तो हम दिन रात करते हैं। प्राणों को समेटने के लिए फिर हठयोग की क्रियाएं करनी पड़ी, हष्ट-पुष्ट बनने के लिए, प्राणों का सन्जम करना है। कुम्भक करके फिर आगे ज्योति मार्ग को पकड़ना है।

परमात्मा ज्योति स्वरूप है। घट-घट बासी है। उसको कब देख सकोगे उसकी ज्योति को? जब जिसम जिसमानियत, जड़ और चेतन को अलैदा करोगे। यह Intellectual light (बुद्धि का प्रकाश) नहीं है। Actual light (सचमुच का प्रकाश) है। जब इन्द्रियों से ऊपर आप आओगे, अवश्य तुम ज्योति का तजुरूबा करोगे जो घट-घट में है। अब सन्तों ने यह देखकर कि जमाने बदल गए हैं, हम इन साधनों के अब काबिल नहीं हैं जिसमानी तौर से भी, क्योंकि न उतनी आयु है, न उतना बल है। वह यह कहते हैं जब दुनिया के सारे काम हम बगैर प्राणों के ख्याल के कर रहे हैं, तो परमात्मा का अनुभव क्यों नहीं कर सकते ? परमात्मा का अनुभव करना है आत्मा ने। आत्मा ने न वह प्राणों से जाना जाता है, न इन्द्रियों से न बुद्धि से, न मन से। तो इसलिए कहते हैं कि जब आत्मा ने अनुभव करना है, प्राणों को छोड़ दो। खाली आत्मा की धाराओं को एकत्र करके उसका Contact दे देते हैं। उन्होंने, कहते हैं अनुभवी पुरुष ने, क्या बताया, कि भई यह सहज योग है। कोई बड़ी बात नहीं। जमाने बदल गये। उसके साथ यह चीज भी Short cut बन गई। प्राणों के संगम को Eliminate छोड़ करके सुरत और शब्द के मार्ग को पकड़ा। अब सुरत, वह मैंने अभी अर्ज किया था, वह क्या है ! वह ताकत है, जिसको अब हम देख नहीं रहे। जो इस जिसम को चला रही है, जीवन्त कर रही है, Animate कर रही है, Enliven कहो, कर रही है। जब वह इससे हट जाती, निकल जाती

है, जिसम बेहिस (निश्चेत) हो जाता है, जला दिया जाता है, या जमीन के नीचे दबा दिया जाता है। उस ताकत का नाम सुरत है। यह याद रखो वह चेतन स्वरूप है, समझे। हिस्सी ताकत कह दो, जो दबाओ तो महसूस करती है। उसको एकत्र कर लो। वह जब अनुभव होगी तो क्या नतीजा होगा ? तब अनुभव होगा परमात्मा का। जब Self knowledge (आत्मा ज्ञान) और Self analysis (आत्म अनुभव) होगा Practically तो Overself (परमात्मा) का अनुभव होने लगेगा, उसकी ज्योति का, उसकी प्रणव की ध्वनि का। तो कहते हैं कि हिस्सी ताकत से ऊपर समेट कर,जो बच्चा,बूढ़ा, जवान सब कोई कर सकता है। बच्चे को बिठाओ वह भी अन्तर में ज्योति देखेगा। God is light परमात्मा ज्योति स्वरूप है, वह जब Absolute था, उस वक्त कुछ भी नहीं, जब Into being (होने में) आया, ''एको अहं बहुस्याम'' उसमें Action हुआ, Vibration (हलोर) हुई। Vibration का नम्बर ज्यादा हो तो Light, (ज्योति का विकास) थोड़ा हो तो Sound (ध्वनि) Light (ज्योति) और Sound principle (शब्द) दो ही अन्तर में हैं। एक ज्योति मार्ग है, एक श्रतु मार्ग है। इनका Contact (परिचय) कब मिलता है ? जब आप जिसम जिसमानियत से ऊपर आओ, इन्द्रियों, के काई को Transcend करो, तब Inner contact मिलता है। जब तक जिसम जिसमानियत से ऊपर नहीं आओगे अपने आपकी होश नहीं आयेगी।

आत्मा, यह परमात्मा का छोटे Scale पर है। इसमें वही गुण हैं जो परमात्मा में हैं। जब वह बाहिरी आलायशों (विकारों) से कहो, स्थूल, सूक्ष्म और कारण जिसमों से इन इन्द्रियों के घाट से ऊपर आएगी उस वक्त वह अपने आपके अनुभव को पायेगी, और Overself (परमात्मा) का अनुभव जागेगा। तो कहते हैं कि सुरत को शब्द के साथ जोड़ो, वह सहज मार्ग है। सब, बच्चा बूढ़ा, सब कोई कर सकता है। Contact कौन देगा ? कोई अनुभवी पुरुष Self analysis (पिण्ड से ऊपर आने) का Experience (व्यक्तिगत अनुभव) देगा। तो कहते हैं, अनुभवी पुरुष ने उन्होंने हमको यह समझाया कि घबराने की जरूरत नहीं। यह चीज सहज ही है। इतनी मुश्किल नहीं रहती। आत्मा ने प्रभु का अनुभव करना है। तुम अगर सुरत अपनी को शब्द के साथ जोड़ोगे, इस मार्ग पर चलोगे तो हकीकत को तुम पा जाओगे। कहते हैं यह उन्होंने मुझे समझाया है। अब सुरत का क्या रूप है ? शब्द का क्या रूप है ? यह आगे बयान करेंगे। गौर से सुनिये -

झीनी सुरत रूप नहीं दरसे, परसे सबद जाए मन घर से ।

कहते हैं यह जो सुरत या आत्मा है ना, यह तुमको अब नजर नहीं आती, क्योंकि जिसम का रूप बनी बैठी है ना, बिजली अगर किसी Plant पर काम कर रही है तो वह नजर तो नहीं

आती ना ! तो इसी तरह सुरत इस जिसम में काम कर रही है। मगर नजर नहीं आती है। जब तक उसको एकत्र करोगे, उसकी हिसी ताकतों को एकत्र करोगे, कोई अनुभवी पुरुष तुमको बिठाकर थोड़ी तवज्जो देकर ऊपर लायेगा, तुम देखोगे तुम जिसम नहीं कुछ और हो। जिसम बेहिस हो जायेगा। मिट्टी का ढेर बनेगा। इसी का नाम जीतेजी मरना है। Learn to die so that you may begin to live. जीतेजी मरना सीखो भई।

मरिय तो मर जाइये फूट पड़े संसार ।
ऐसी मरनी जो मरे दिन सौ-सौ बार ।।

जब चाहो, इससे ऊपर आओ। इस साईन्स को हम आज भूल गए। यह क्या नई साईन्स है ? नहीं भाई, पुरातन से पुरातन है, मगर हम भूल गए। हमारे इतिहासों में इसका जिकर आया है। मगर हमने उस तरफ कभी तवज्जो नहीं दी। सावित्री का जीवन सबने पढ़ा होगा। लिखा है कि एक ज्योतिषी ने यह पेशगोई (भविष्यवाणी) की कि तेरा पति फलाने दिन दरख्त से गिर कर मर जायेगा, इतने बजे। वह दिन जब बाहर जाने लगे तो साथ यह भी चल पड़ी। जब वह वक्त आया, वाकई वह दरख्त काट रहा था, दरख्त की शाख टूट गई, वह गिरा, बड़ी चोट आई। उसके सिर को अपनी गोद में रख लिया। इन्तजार करने लगी मौत की। यमराज आए, उसकी आत्मा को लेकर चल पड़े।

यह बात पढ़ते हैं हम। उसके आगे कुछ भी जिकर है, कि सावित्री भी शरीर को छोड़ साथ चल पड़ी, यह जिकर आता है, हमने इस पर कभी विचार नहीं किया। फिर लिखा है वापस दुबारा Re-enter हुई, आ गई, क्या यह मुमकिन है ? हां Dead certainty है, यही जीतेजी मरने के राज़ का हल करना अनुभवी पुरुषों के हाथ में है। वह करते रहे, हमको कराते रहे How to rise above body-consciousness ? जिसम-जिसमानियत से तुम कैसे ऊपर आ सकते हो ? हम जिसम जिसमानित में, इतना इस का रूप बन बैठे हैं कि हम यही चाहते हैं, इससे परे हमें कोई और जीवन नजर नहीं आता, इसलिये कहते हैं, दो घन्टे और जी लें। मौत से हमें खौफ क्यों आता है ? हमें मरना नहीं आया। दिन में सौ-सौ बार मरने का जो जिकर कबीर साहब ने किया, At will, उस Science को हम भूल गये ।

नानक जीवन्दियां मर रहियै, ऐसा योग कमाइये ।

ऐसे योग की कमाई करो जो जीतेजी तुम मरने के राज को जान जाओ। अगर तुम जानोगे तो तुम्हारी देखने वाली आंख ही कुछ और बन जायेगी ।

मरने से सब जग डरे जीवया लोड़े सब कोई ।
गुरु परसादी जीवत मरे तां हुक्में बूझे को ॥

अगर जीतेजी किसी अनुभवी पुरुष की कृपा द्वारा अगर तुम इस राज को पा जाओगे, तुम परमात्मा के Divine plan के Conscious co-worker बन जाओगे। तुम देखोगे, वह काम कर रहा है। तुम्हारी अन्तर की आंख खुलेगी। तुम देखोगे वह ताकत काम कर रही है, जो सब कुछ चलाने वाली है ।

नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन हो ।
जो ब्रह्मण्डे सोही डिण्डे जो खोजे सो पावे ॥

हमेशा के जीवन को पा जाओगे। तो कहते हैं, सुरत को अब देख नहीं सकते, हम जिसम का रूप बने बैठे हैं। तुम अगर मन के घाट से, क्योंकि हमारी सुरत मन के आधीन है,मन इन्द्रियों के आधीन है, इन्द्रियों को भोग खैच रहे हैं। हम जिसम का और जगत का रूप बने बैठे हैं। तो कहते हैं जब तुम मन के घाट को छोड़ो तब अपने रूप का आप अनुभव करोगे कि मैं आत्मा हूं, I am a drop of the ocean of life. ''सोहम''। जैसा तू है, वैसा मैं हूं।I and my father are one. इसका अनुभव जागेगा। यह बुद्धि का Inference नहीं अनुभव है You will see दुनियां सारी ही, जो भी बयान करती है, वह या Feelings, में है या emotions में या Inference draw कर रहे हैं। Feelings emotions and inferences through intellectual wrestling are all subject to error, seeing is above all अनुभव जो है Conscious co-worker होना जो है, यह गलती से रहित है। इसलिए कहा कि सन्तों की शहादत (गवाही) को सुनो।

सुन सन्तन की साची साखी, सो बोलें जो पेखें आखी ।

सन्तों की शहादत को सुनो, वह सच्ची है, क्योंकि जो कुछ वह देख रहे हैं वही बयान कर रहे हैं। वह Inferences नहीं निकाल रहे। वह किताबों ग्रन्थों को Quote नहीं कर रहे। कबीर साहब के पास एक दफा एक पण्डित आ गये। आलिम फाजिल थे। उनको कहने लगे, भई देखो ।

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे ।

ऐ पण्डित ! तेरा और मेरा मन कैसे मुत्तफिक (सहमत) हो सकता है ? क्योंकि -

मैं कहता हूं आंखन देखी, तू कहता कागत के लेखी ।

मैं तो अनुभव करके कह रहा हूं, देख रहा हूं। तू किताबों को Quote कर रहा। कितने लोग

हैं, जो अनुभवी पुरुष हैं ? बड़े थोड़े ! राजा जनक को केवल एक हस्ती, हिन्दुस्तान भर में मिली है, अष्टावक्र, जो अनुभव दे सकी। आलिम फाजिल तो आगे भी बड़े थे,आज भी बहुत हैं। तो मेरे अर्ज करने का मतलब क्या है, स्वामीजी महाराज फर्मा रहे हैं, कि सुरत का अनुभव, तुम उसके रूप को देख नहीं सकते। कब देखोगे ? जब मन के घाट से ऊपर आओगे। सुरत और मन मिलकर जीव बना बैठा है। मन को इन्द्रियां खैंच रही है। इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं। यह जिसम का और जगत का रूप बना बैठा है। ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है। तो जब तुम मन के घाट से ऊपर आओगे, पहिले इन्द्रियों को भोगों से हटाओगे, मन को इन्द्रजाल से हटाओगे, और मन को किसी और लज़त में देकर महव (लीन) करोगे, आत्मा जुदा होगी, Analyse होगी, तब देखोगे कि मैं आत्मा हूं, मैं भी चेतन हूं, और वह प्रभु महाचेतनता का समुन्दर है।

तो जब तक तुम मन इन्द्रियों के घाट पर बैठे हो, अपने आपका अनुभव नहीं कर सकते। बड़ी मोटी बात है। तो अनुभवी पुरुष हमें क्या करता है ? पहिले दिन ही हम को जिसम जिसमानियत से ऊपर लाता है, थोड़ा तजरूबा देता है, How to rise above body consciousness ? (पिण्ड से ऊपर आने का) अगर उसको हम रोज़-रोज़ करते हुए अभ्यास करें तो हमारी दुनिया को देखने वाली नजर जो है, Angle of vision बदल जायेगी। हम फिर आत्मा के Level से देखेंगे, जिसम के Level से नहीं। पढ़े लिखे, अनपढ़, अमीर गरीब सब एक ही भूल में, Grand delusion में जा रहे हैं। अनुभव खुलेगा, यही दुनिया किसी और रंग में नजर आयेगी।

सुन्न सिखर जाये रूप दिखाना, गगन मंडल के पार ठिकाना ।

कहते हैं पहिले गगन, आँखों के ऊपर यह जगह (आंखों के पीछे इशारा) पहिले तुमको गगन, आंखों के ऊपर आना होगा। पिंड को छोड़ो, गगन पर जाओ। Self-analysis करो।

चूं जे हिस बेरूं नियामद आदमी, बाशद अज तसवीरे गैबी अजनबी

जब तक तुम इन हिसों से ऊपर नहीं आते जो गैब की तसवीर है, उससे तुम लाइल्म (बेखबर) रहोगे। एक छत है। उसकी सौ पौड़ियां है। तुम दस बीस, पचास अस्सी नब्बे चढ़ गये, ऊपर की हालत तो नहीं नजर आती। जब सारी पौड़ीयां चढ़ जाओ, फिर देखोगे ऊपर क्या है ! कि जब तुम गगन के ऊपर आओगे, यह स्थूल देह उतरेगी, इसके अन्तर तुम्हारी सूक्ष्म देह है, उसके अन्तर कारण देह है।

जो ब्रह्मण्डे सोही पिण्डे जो खोजे सो पावे ।

ब्रह्मण्ड के नमूने पर तुम्हारी आत्मा को शरीर मिले हैं, स्थूल, सूक्ष्म और कारण। अब हम स्थूल में काम कर रहे हैं। इससे ऊपर जाने का पता ही नहीं कि क्या राज़ है। मरने के समय हम स्थूल देह को छोड़ जाते हैं। फिर आगे सूक्ष्म देह को उतारो, इन्द्रियों का घाट छोड़ो सूक्ष्म पिण्ड का, फिर कारण देह से ऊपर आओ, कारण इन्द्रियों का घाट छोड़ कर ऊपर आओ, फिर तुम अनुभव करोगे कि मैं आत्मा हूं। बड़ा Scientific way है। अनुभवी पुरुषों ने बड़ा साफ़ पेश किया है। जब-जब महापुरुष आए हैं, हमेशा इसी को पेश करते रहे। सिर्फ Elementary stages (शुरु में) उन्होंने प्राणों को साथ लिया है, जो फी जमाना (आजकल) हम उसके काबिल नहीं है। जो कर सकते हैं बेशक करें। मगर बहुत कम लोग हैं।

मैं ऋषिकेश में रहा, 1948 ई. में चार एक महीने। मैं हर एक महापुरुष से मिला। सब ज्यादातर Intellectual wrestlers (बुद्धि के पहलान) थे। केवल एक हस्ती मुझे मिली जो पातन्जल योग से चेतन को अलहेदा करके ऊपर जाते थे जिसम से। तो Practically करना बात कुछ और है। उसके लिए फिर हठ यग की क्रियायें और और साधन करने पड़ते हैं। अगर वही चीज हमको सहज मार्ग से मिल जाये ! तो सन्तों का मार्ग सहज योग है। वह सुरत को सिर्फ लेते हैं और शब्द के साथ जोड़ते हैं। अब सुरत का अनुभव कर रहे हैं। तुम कैसे जानोगे कि तुम आत्मा हो ।

मैं जब एक दफा, शायद वाशिंगटन का जिक्र है, वहां जब टेलीविजन पर मुझे बुलाया गया तो और चार-पांच Judaism और Christianity और तीन चार मजहबों के Head भी आ गये। Just for discussion and overthrowing's sake सबने सवाल किया, एक दो तीन किये। उनका जवाब उनको मिला तो एक बिशप था वह कहने लगा How do we know we are our own self ? यह सवाल किया। मैंने कहा, देखिए अगर तुम्हारे पेट में दर्द पड़ जाय, How do you know you are suffering ? अनुभव जागता है, You know for your own self that you are now above the body or not तो अनुभव, सच्चे मानों में Self knowledge कब होगा ? जब आप पहिले गगन पर आओ, फिर सूक्ष्म से ऊपर जाओ, कारण से ऊपर जाओ तीन गुणों से पार होकर योगीश्वर गति को पाओगे, उस वक्त देखोगे, ''सोहम''जैसा तू है, वैसा मैं हूं। इसको एकता को, कई तरीकों से बयान किया गया। कहीं कहा गया कि लोहे के गोले को आग में डालो, वह आग का रूप बन जाता है। कहीं पर कहते हैं, पानी पानी में मिल गया।

जैसे जल में जल आये खटाना, त्यों संग ज्योति ज्योति मिलाना ।

यह मिसालें देकर एकता का थोड़ा-सा दृश्य पेश किया है। वह एकता क्या है, यह आत्मा अनुभव करती है। लफ्जों में इतना ही बयान हो सकता है। तो कहते हैं, अगर आप सुरत का अनुभव करना चाहो तो गगन के घाट पर, ऊपर आओ। पहिले जड़ चेतन को अलेहदा करो, फिर स्थूल से ऊपर आओ, फिर सूक्ष्म और कारण से ऊपर आओ। फिर अनुभव करोगे सच्चे मानों में जैसे - ''सोहम्''। सुरत को फिर क्या करो ? शब्द के साथ जोड़ो। शब्द किसको कहते हैं ? परमात्मा Absolute God जो है, उसको अशब्द कहा वेदों ने, सब महापुरुषों ने अपशब्दम् कहा । वह जब Into being (होने में) आया।

''एको अहं बहुस्याम''

एको कवाओ, तिसते होए लख दरियाओ ।

एक ही कहने से, कई Creations (सृष्टियां) Into being इजहार में आई। कहते हैं उस वक्त क्या हुआ, उसमें Vibration (हिलोर) हुई। Vibration में दो चीजें हुई मैंने पहिले अर्ज किया, Light (ज्योति) और Sound (ध्वनि) यह अशब्द का इजहार God into expression कहो। उसको हम देख भी सकते हैं और सुन भी सकते हैं। उसको कौन आँख देख सकती है? दिव्य चक्षु से हम देख सकते हैं, बाहरी चमड़े की आंखों से नहीं। उसके नूर को अशब्द को, न किसी ने देखा न कोई देख सकता है। जब Into being आया, जो God into expression है, उसमें Light है, उसमें Sound principle है। उसको हम देख भी सकते हैं, सुन भी सकते हैं। कब ? हम इन्द्रियों के घाट से ऊपर आये, दिव्य चक्षु से, शिव नेत्र से देख सकते हैं। तो कहते हैं, वह है शब्द। जब सुरत पिण्ड को छोड़ेगी, उसमें Light और Sound principle है उसके साथ जुड़ेगी, वह कहां आपको ले जायेगी ? जहां से वह आ रही है। अशब्द में पहुंचाने का जरिया है वह।

बाहरमुखी जितने साधन हैं, इन्द्रियों के घाट के, यह जमीन की तैयारी के लिए है। इनसे फायदा उठाओ, भाव-भक्ति पैदा करो। उधर दिल की रूचि बनाओ और Practical self analysis, जब आप पिण्ड से ऊपर आओगे, कोई अनुभवी पुरुष मिलेगा, आपको ऊपर का Inner contact देगा, आप ऊपर के देखने वाले भी बनोगे, खुद अनुभव करोगे, किसी गवाही की जरूरत नहीं रहेगी।

सतगुरु मिले तां अखी वेखे

तो कहते हैं, यह सुरत और शब्द योग है जो सहज है, सबको सिखलाते हैं। जो मनुष्य का आदर्श है, उसको जीतेजी हासिल कर लेते हैं।

रूह सुत का तरसा ऐसा, बिना अनुभव क्यों कर कहूं कैसा ।

कहते हैं, इस तरह से तुम सुरत को जानने वाले हो जाओगे। लफ्जों में बयान नहीं हो सकता।

अनुभव से यह जाना जाई, शब्द बिना अनुभव नहीं पाई ।

कहते हैं, तो अनुभव से तुम देखने वाले हो जाओगे। अनुभव, Inner eye खुलेगी, तुम देखोगे मैं कुछ और हूं। यह जिसम नहीं हूं। जब सब गिलाफ उतरेंगे, यह भी देखेगा कि मैं भी उसी जाते हक का (प्रभु अविनाशी का) कतरा हूं। मैं भी चेतन स्वरूप हूं। कहते हैं, अब यह अनुभव कैसे जागे ? Seeing का सवाल कैसे हल हो ? कि जब आप गगन पर आओगे। अब Self analysis का मजमून है। कोई अनुभवी पुरुष आपको शब्द का Contact (परिचय) देता है। उस God into expression power का जो Light और Sound principle है। उसके साथ लगने से वह देखने वाली जो Inner eye है, खुल जायेगी। तुम अनुभव करने लगोगे, मैं जिसम नहीं हूं। पिण्ड से ऊपर आकर शब्द की कमाई के (शब्द के साथ जुड़ने) बगैर, तुमको न अपनी होश आती है, न अनुभव जागता है। यह शब्द की तारीफ सब महापुरुषों ने की है -

उतपत प्रलय सबदे होवे, सबदे ही फिर ओपत होवे ।

उत्पति और प्रलय दोनों जिस ताकत के आधार पर हो रही है और दुबारा सृष्टि का आगाज (शुरूआत) जिस आधार पर होता है, उसका नाम है शब्द।

पार साजन अपार प्रीतम, गुरु सुरत सबद लंघावे ।

जिस प्रभु को हमने मिलना है वह सब हदों के पार है। गुरु क्या करता है ? हमारी सुरत को, जो जिसम का रूप बनी बैठी है, इसको Analyse करके ऊपर लाता है, उस शब्द से जो कि ज्यति स्वरूप और प्रणव की ध्वनि उदगीत हो रहा है, उससे जोड़ देता है, That is the way back to God उस वक्त असलियत साफ नजर आने लगती है Analyse हो के। तुम खुद देखने वाले हो जाते हो। अनुभवी पुरुष आपको उसका Firsthand experience (अनुभव) देता है, गगन पर ऊपर लाने का राज देता है, How to rise above body consciousness. तुम्हारी अन्तर की आंख को खोलेगा। तुम अन्तर में उस ज्योति के देखने वाले हो जाते हो, प्रणव की ध्वनि को सुनने वाले हो जाते हो। उसकी कमाई करने से दिनों दिन तुम्हारे अन्तर वह अनुभव जगता चला जायेगा। तुम खुद देखोगे, अपनी गवाही आप दोगे, किसी की गवाही की जरूरत नहीं।

सुरत सबद दोऊ अनुभव रूपा, तू तो पड़ा भरम के कूपा ।

कहते हैं, तू बाहर भरम में फंस रहा है। भरम किस को कहते हैं ? जो चीज असल में कुछ और हो हमें नजर कुछ और आती हो। यह जिसम बदल रहा है। हम जिसम का रूप बने बैठे हैं। यह भूल है। यही भरम है। तुम जिसम नहीं हो। मगर जिसम का रूप बन रहे हो। कहते हैं, तू इस भरम में फंस रहा है। सुरत शब्द दोनों ही हैं, अनुभव करने के मजमून हैं।

करनी कर कर सुरत चढ़ाओ, शब्द मिले अनुभव घर पाओ ।

कहते हैं, अनुभव को कैसे पाओगे, अब सवाल यह आता है। सवाल दर सवाल है। कहते हैं पहिले जड़ चेतन अलेहदा करो, सुरत को ऊपर लाओ।

चूं जे हिस बेरूं निआमद आदमी, बाशद अज़ तस्वीरे ग़ैबी अजनबी ।

जब तक हमारी सुरत, यह हिस्सी ताकत, जिसम को छोड़कर ऊपर नहीं आती, तुम गैब की तसवीर से लाइल्म (बेखबर) रहते हो। कहते हैं, कमाई करके रोज दिन, गुरु ने तुम को परिचय दिया है कि किस तरह तुम जिसम से ऊपर आते हो, जब जिसम से ऊपर आने लगोगे, उस शब्द की ध्वनि और उसकी ज्योति से जब जुड़ोगे, तो वह और Clear-cut (साफ) होगी, चीजें देखने में आने लगेगी, तुम अनुभव को पा जाओगे। जब तक तुम इस जिसम के घाट पर बैठे हो, पहिले दिन ही अगर महापुरुष तुमको Firsthand (व्यक्तिगत) तजरूबा भी दे तो भी उसका रोज रोज कमाई करो। जब उस्ताद ने पढ़ाया, लड़के ने याद किया, उस्ताद और पढ़ाता है। कहते हैं, यह कैसे बने। आगे जिकर फिर करते हैं -

बिना शब्द अनुभव नहीं होई, अनुभव बिन समझे नहीं कोई ।

कहते हैं, जब तक शब्द के साथ Contact हमारी सुरत का न हो, पिण्ड को छोड़कर, यह अनुभव जागता नहीं। जब तक खुद न देखने वाला हो यकीन नहीं आता। लोग कहते हैं, भई जिसम से कैसे ऊपर आये ? मर तो नहीं जायेंगे ? अरे भई नहीं मरोगे। बैठो। करके देखो। जो आमिल होगा, यही कहेगा, बैठो। करके देखो। जो आमिल नहीं होगा वह Avoid करेगा (टालेगा) चलो भई, अभी अधिकार नहीं बना। देखा जायेगा। अभी यह करो, अभी वह करो। तो कहते हैं, जब तक देखो नहीं यह याद रखो, गुरु के कहने पर भी पूर्ण विश्वास नहीं, जब तक हम अपनी आँखों से न देखने वाले हो जायें, समझे ।

जब लग न देखूं अपनी नैनी, तब लग न पतीजूं गुरु की बैनी ।

तजरबे के तौर पर हम विश्वास कर लेते हैं यह गुरु कहता है, ठीक होगा। जब वह बिठाता

है और तजुरबा कराता है, फिर यकीन आता है। अपने आप यह तजुरबा नहीं जागता। हो सकता है पिछले कर्मों के Reaction से थोड़ी सी ज्योति अन्तर में आ जाए, How to develop further ? आगे कैसे जाना है ? यह पता नहीं। तो अनुभव का जागना शब्द की कमाई से होगा। शब्द की कमाई, जब सुरत पिण्ड को छोड़ेगी तब होगी। तुम खुद देखने वाले हो जाओगे। किसी की गवाही की जरूरत नहीं रहेगी।

West (पश्चिम) में जब मैं गया, उनको जब Theory पेश की थी ना, बड़े Intellectual (बुद्धि की सान पर तेज किये) सवाल करते थे। आखर जवाब मिलते थे, उनको कहते थे, अच्छा भई, Morning meditation (सुबह साधन अभ्यास) में आ जाओ। जब वह आते थे, उनको तजुरबा मिलता था। They were convinced.

सूरत शब्द दोऊ रूप अमोला, सुन्न चढ़े जिन निज कर तोला ।

कहते हैं सुरत और शब्द दोनो भई, यह अनमोल वस्तु है, समझे ! जब आप पिण्ड,अण्ड और ब्रह्माण्ड से पार, स्थूल सूक्ष्म और कारण के, सुन्न देश पहुंचेंगे, उस वक्त इसकी हकीकत Clear cut (स्पष्ट) सामने नजर आयेगी। उसकी क, ख, कहां से है ? आप देखिये अनुभवी पुरुषों की तालीम कहां से शुरु होती है ? Where the world's philosophies end, there the religion starts वह आपको पहले दिन ही पिण्ड के ऊपर लाते हैं, पराविद्या की तालीम देते हैं, Firsthand experience देते हैं। कहते हैं, रोज-रोज बढ़ाओ।

तां ते करनी गुरु बताई, सतगुरु दया लेवो संग भाई ।

कहते हैं, यह करनी कहां से आयेगी ? किसी अनुभवी पुरुष से आयेगी। वह गुरु करके देता है, Here it is (यह है लो) एवम् ब्रह्म करके देता है ।

गुरु काढ़ तली दिखलाया ।

राजा जनक को पूछा अष्टावक्र ने, क्यों भाई ज्ञान हो गया ? कहता है, हां महाराज हो गया। थोड़ा-सा तजुरबा मिला ।

परदा दूर करे आंखन का, निज दरशन दिखलावे ।

जिसमें यह समर्था है ।

साधो सो सतगुरु मोहे भावे ।

जो अनुभव दे सके, उसका नाम, साधु, सन्त और महात्मा है। कहते हैं, यह करनी कौन कराता है, बिठा कर थोड़ा तजुरबा मिले, कैसे पिण्ड से ऊपर आयें। यह किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से होगा। जब वह कृपा करेगा, फिर रोज-रोज करो। मेहर हो गई ना ! तजुरबा

मिला, उसको रोज-रोज करके दिखाओ। अपने आप हम क्यों नहीं जा सकते ? हमारी आत्मा मन के आधीन, मन आगे भोगों के आधीन, हम जिसम का रूप बने बैठे हैं। साधन वह कर रहे हैं, जो अपराविद्या के हैं, जिनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है । सवाल तो यह है। जो इन्द्रियों का रूप आगे ही बना पड़ा है, इन्द्रियों के घाट के साधन करता है, यह करता हुआ इन्द्रियों के घाट से कैसे ऊपर आ सकता है ?

खैंचे सुरत, गुरु बलवान ।

कोई समर्थ पुरुष बिठा कर थोड़ी तवज्जो दे, जड़-चेतन के अलेहदा होने का तजुरबा दे, यह मेहर हो गई ना ! यह करनी मेहर से शुरू होगी। जब वह देगा, रोज रोज बढ़ाओ।

मेहर दया करनी कराई । करनी कर वह मेहर बढ़ाई ।

मुतलाशी-हक (जिज्ञासु) गया अनुभवी पुरुष के पास, उसने दया करके तजुरबा दे दिया, Way up कर दिया। इन्द्रियों के घाट से कैसे तुम ऊपर आ सकते हो इसका Firsthand experience दे दिया। अब Student ने उसको खूब रोज Practice करके बढ़ाया। उस्ताद को जाकर बतलाया जी मैं यह कर रहा हूं। हां भई। और खुशी ले ! उस्ताद ने पढ़ाया, लड़के ने सबक याद किया, उस्ताद ने और पढ़ाया। मेहर से करनी, करनी से मेहर उपजती है। इस तरह से इन्सान उस गति को पा जाता है जिस गति को उसका गुरु पहुंचा ।

सन्त और पारस में बड़ो अन्तरो जान,
वह लोहा कन्चन करे वह कर लें आप समान ।

सन्त और पारस में बड़ा भारी फरक है। वह लोहे को सोना बनाता है, पारस नहीं बनाता। सन्त आपको सन्त पदवी देता है। और सन्त किसको कहते हैं ? भेख का नाम सन्त नहीं है।

हमरो भरता बड़ो विवेकी, आप ही सन्त कहावे ।

बड़ा विवेकवान है वह मालिक। जब वह किसी जिसम पर इजहार करता है, उसको लोग सन्त कहते हैं। जो Mouthpiece of God बन गया।

जैसे में आवे खसम की बाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो।

जो इस अनुभव को पा गया उसका नाम सन्त है।

गुफते ऊ गुफताये अल्लाह बबद, गरचे अज हलकूमे अब्दुल्ला बबद ।

उनका कहा हुआ प्रभु का कहा हुआ होता है ख्वाहे जाहिरा शकल में वह आवाज इन्सानी गले से निकलती मालूम होती है ।

करनो मेहर संग दोऊ चलते, तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते ।

मेहर से करनी, करनी से मेहर उपजती है। मेहर से करनी और शौक बढ़ा, और मेहर बढ़ी, इस तरह करते करते तुम पूर्ण फल को पा जाते हो। उसी गति को पा जाओगे जिसको उसने (गुरु ने) पाया। कई भाई कहते हैं, चलो नाम लिया मुक्ति हो गई। भई सोलाह आने झूठ है। बीज तो बीजा गया, वह जाया नहीं होगा। अगर आपने उसकी कमाई पूरी नहीं की तो आपको करनी होगी। इस जन्म में करो, ख्वाहे अगले में करो। क्यों न अभी कर लो ! हां यह तो हो सकता है कि जो बीज आप में बोया गया, वह जाया नहीं जा सकता, किसी समर्थ पुरुष का बीज बोया हुआ। उसके लिए फिर आपको ऐसी जूनी मिलेगी जिसमें वह बीज फल सके। वह मनुष्य जीवन से नीचे नहीं जाएगा, मगर जब तक यह कोर्स खुद ही पूरा नहीं करोगे, काम नहीं बनेगा। Clear cut (स्पष्ट) चीज पेश कर रहे हैं। इस भुलेखे में न रहो कि चलो, ''गुरु मिला तो कहा कमाना।'' उलटे माने मत निकालो। गुरु मिले तो जो वह कहे वह करो। हमारे हजूर फर्माया करते थे कि यह बिल्टी थोड़े ही है जो करके भेज दी जायेगी। ले जायेगा तो साफ करके ले जाएगा ना

अस संजोग मौज से होई, मौज उपाव नहीं अब कोई ।

कहते हैं, अब ऐसा संजोग कैसे बने ? किसी पूर्ण अनुभवी पुरुष का मेल हो, वह करनी हमसे कराये, कुछ तजुरबा दे, तो फिर आगे चले ना ! लोग आते हैं, एक लैक्चर दे जाता है। एक आदमी बड़ी भारी तकरीर करता है। Business के असूल यह हैं। बड़ी आला तकरीर दे जाता है। जिनको वह लेक्चर देता है, उन बिचारों के पास पैसा ही कोई नहीं, बताओ तुम्हारा लैक्चर क्या करेगा ? अगर साथ ही तुम उनको कोई हजार दो हजार रुपया दे दो, जाओ भई अब करो, तब तो वह करे ।

सन्तन मोको पूंजी सौंपी ।

तजुरबा कुछ दोगे कि कैसे पिण्ड से ऊपर आते हैं, तब आगे चले ना ! जब आपने पूंजी ही नहीं दी, तो क्या करेगा ? तो अनुभवी पुरुष आपको कुछ तजुरबा देता है। उसको दिनों दिन बढ़ा लो। ऐसे अनुभवी पुरुषों का मिलना भागों से होता है, उस प्रभु की मौज हो, कृपा हो तब।

कृपा करें तां सत्गुरु मेले ।

राजा जनक ने, एक बार तलाश की, नहीं मिला। दुबारा फिर सारे इकट्ठा किये। उनमें एक हस्ती मालिक ने दया की, मिला। कहते हैं जब तक ऐसा न हो सामान, अनुभवी पुरुष न मिले, वह हमें Contact न दे, जिसम जिसमानियत से ऊपर आने का तजुरबा न दे, हम आगे

चल कैसे सकते हैं ? तो कहते हैं, यह मौज उस परमात्मा की दया और मौज पर है, जब वह कृपा करे। यही राम जी को वशिष्ट ने कहा कि ऐ राम ! जब तक आत्मदेव कृपा न करे,कोई उसको नहीं पा सकता है। उन्होंने क्या कहा, कि अच्छा महाराज ! अगर यही है तो फिर आत्मदेव कृपा करेगा तो देखी जायेगी। कहने लगे नहीं राम ! जब तक आत्मदेव कृपा न करे तुम इन्द्रियों को दमन करके, झोली फैलाकर बैठे रहो उसके दर पर। देगा वही, जब वह चाहेगा। कहते हैं वह कब देगा ? उसके देने की निशानी क्या है ? जिस दिल के अन्दर तड़प होगी, वह मालिक सामान करेगा। कीड़ी की आहट को वह पहिले सुनता है। जो बच्चा मांगता है मुंह से, वह देता है। Knock and the door shall be opened unto you हमारा दिल दुनिया को मांग रहा है, प्रभु को नहीं मांग रहा है। बहुत कम लोग प्रभु को मांगते हैं। याद भी करते हैं, तो इसलिए कि हमारे दुनिया के काम ठीक रहे, हमारे बच्चे राजी रहे, हमारी रोजी खुली रहे, हमारा नाम ऊंचा हो, हम यह हो। अरे भई कितने लोग हैं, जो प्रभु को प्रभु की खातिर याद कर रहे हैं ? जो बच्चा मांगता है, वह (प्रभु) देता है।

पिता कृपाल आज्ञा यह कीनी, बारक मुख मांगे सो दीनी ।

दिल तो दुनियां मांग रहा है, जबान में हम कहते हैं, कि प्रभु मिले, तो कैसे मिले ? तो जो तड़प करेगा, मांगेगा, जिस हृदय में विरह और सोज उसके पाने के लिए जागेगी परमात्मा अवश्य सामान करेगा। किसी अनुभवी पुरुष को मिला देगा। तो कहते हैं, जब तक उसकी कृपा न हो जीव बेचारा क्या कर सकता है ? आगे कहते हैं, एक उपाय हमारे दिल में आया है वह तुम्हारे सामने रखते हैं। Just try and see क्योंकि अनुभवी कोई बोर्ड लगा कर तो नहीं बैठा हुआ कि यह अनुभवी पुरुष है। How to discriminate ? बट्टा उठाओ तो साधु, बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है। अब ऐसे अनुभवी पुरुष को हम पहिचाने कैसे ? इसकी शनाख्त (पहिचान) भी सन्तों ने दी है। समझे ! वह यह है, कि वह अपनी किरत (कमाई) पर आप गुजारा करता हो। पहिली बात यह है। जो Show (आडम्बर) का ख्वाहिशमन्द न हो, और फिर दूसरे को Firsthand experience (व्यक्तिगत अनुभव) दे सके। पहला काम। उसका बिजनेस व्यापार न चल रहा हो, अपनी जाती गरजों के लिए। कोई दे तो पब्लिक के लिए खर्च करता है। उसके मण्डल में बैठने से थोड़ी शान्ति और टिकाव मिलता है। यह निशानियां हैं। अब कहते हैं ऐसे अनुभवी पुरुष को कैसे पाया जाये ? आगे जिकर करेंगे। गौर से सुनिये -

पच पच थक थक सब ही हारे, मौज बिना क्या करें बिचारे ।

दुनिया में लोग हैं, जो उस प्रभु की तलाश में हैं। बड़ी तलाश करते करते भी फिर भी हार

जाते हैं। कोई महापुरूष नहीं मिलता, उनको जाती तजरूबात जो बड़े तल्ख होते हैं ऐसे पुरुषों के मिलने से। वह देखते हैं, जो मन इन्द्रियों पर बैठा है आखिर गिरेगा। Cat must be out of the bag. तो उनका वह तल्ख तजरूबा मजबूर करता है यह कहने को, It is all gurudom गुरुडम है, इसमें शक नहीं दुनिया को बहुत अधोगति हालत में पहुंचाया है। मगर सच्चे गुरु के बगैर गति नहीं है। मगर गुरु गुरु हो। गुरु, कहते है अंधेरे में प्रकाश करे। जो स्याही के परदे को हटाकर उसका अनुभव करा सके। Firsthand experience (व्यक्तिगत अनुभव) दे सके, जिसम जिसमानियत से ऊपर लाकर, उसका नाम गुरु है।

घर में घर दिखलाय दे सो सतगुरु पुरख सुजान

जो दिखा सकता है, यह नही कहता मर कर मिलेगा। वह आपको अपराविद्या के साधनों में नहीं लगाये रखना चाहता। वह पहिले दिन ही तुमको पिण्ड से ऊपर लाता है। अपराविद्या के साधनों का ताल्लुक है जिसम जिसमानियत से, इन्द्रियों के घाट से। पहिले दिन तुमको ऊपर जाने का रास्ता देता है, Way up direct रोज-रोज कमाई करो, कहते हैं, ऐसे अनुभवी पुरुष के मिलने का क्या सामान होता है ? प्रभु दया करे तो ! आगे कहते हैं -

एक उपाय कुछ मन में आया, पर थोड़ा सा चित्त समाया ।

कहते हैं, एक उपाय मेरे दिल में आया है। देखो मैं उसको बयान कर रहा हूं। स्वामीजी कहते हैं, क्या है ? आगे बतलायेंगे ।

जब जब सन्त जगत मैं आवें, ढूंढ भाल उनके ढिंग जावे ।

कहते हैं जब जब आप सुनो, कोई महात्मा है, जाओ उसके पास। सुनो। देखो। अपना दिल दिमाग रखते हो, विचारो। सुनो, वह क्या कहता है। उसकी भी सुनो, अपने होश हवास ठिकाने रखो। और सुनो, वह क्या कहता है। जहां कही कोई सन्त महात्मा सुन पाओ, गुरेज न करो, जाओ वहां। एक लाल था कीमती। पत्थरों में गुम हो गया। तो तलाश छोड़ों नहीं। जहां हजारों ही Socalled साधु हैं वहां सचमुच भी एक आध साधु निकल आये। तलाश नहीं छोड़ो। जाओ महात्मा के पास जहां-जहां भी मिले।

मैं कई महात्माओं के पास गया, कई महात्माओं के पास, उस चीज के लिये जो मुझे चाहिए थी। मैं एक जगह गया। वहां महात्मा थे। योग अभ्यास करते थे। सिर में मखन के पेड़े थे, समाधि में बैठे थे। दिन में तीन बार बादाम और धनियां रगड़ कर पीते। मालिशें कराते थे। मैंने कहा, भई हम से तो यह नहीं हो सकता, हमें तो वह चाहिए अभ्यास जो गुरु अर्जुन साहब ने, जब आपको पता हो उनके भाई उनसे मुखालफत करते थे, वह गुरुद्वारा श्री अमृतसर साहब

को छोड़कर पिपली साहब जा बैठे थे। जो पिपली साहब का अब गुरुद्वारा है वहां पर, इतिहास बताता है कि चने की रोटी पकती थी। हमें तो वह अभ्यास चाहिए जो चने की रोटी खा कर भी हो सके। ''जोइन्दा याबिन्दा''। आखिर मालिक सामान करता है। मिले हुए को मिला देता है। तो कहते हैं पहिली बात, जहां भी कहीं महात्मा को सुन पाओ, जाओ, गुरेज मत करो। वह तुमसे कुछ लेता तो नहीं है। सुनो। अपना दिल दिमाग अपने साथ रखो। वह क्या कहता है ? देखो। आखर भई दो पैसे का कोई घड़ा मोल लेता है वह भी ठकोर कर लेता है।

जाय करे नित सेवा दर्शन, हाजिर रहे गिरे उन चरनन ।

कहते हैं यह नहीं करो, एक बार जाके फैसला कर आओ। बार-बार जाओ देखो क्या मिलता है ? तुमको, एक दिन, हो सकता है कोई खास कारण हो जो सोहबत, Intake ठीक न बने। दो बार, चार बार, दस बार, बीस बार जाओ।

नित्य हजिरी उनकी करते, मन में दीन हीन होय रहते ।

कहते हैं, जाओ, रोज बैठो। मन को Receptive बनाओ, गुण ग्राहक बनो। वह क्या कहता है ? उससे गुणों को हासिल करो। समझो ! और हासिल करके क्या करो, दीनता में रहो ! जो बर्तन, याद रखो जो प्याला सुराही के नीचे होगा वह भर जाएगा। अगर तुम जानते हो, मैं बहुत कुछ जानता हूं, अरे भाई, जो प्याला सुराही के ऊपर होगा, वह क्या लेगा ? जाओ, Receptive बनो। देखो वह क्या देता है ! उसमें क्या गुण है। जांचो।

पर यह बात बड़ी अति झीनी, सन्त करावें निन्दा अपनी।

कहते हैं, एक बड़ी मुश्किल बात यह है कि सन्तों की दुनिया में निन्दा भी बड़ी होती है, जो सचमुच सन्त होते हैं। उसका कारण, कि वह सच बात कहते हैं। जो पेट के पुजारी हैं, वह डन्डा लेकर गिरद हो जाते हैं, उलटे सीधे प्रापेगन्डा करने लग जाते हैं। गरज उनकी अपनी छुपी हुई होती है। बारिश होती है। जो जमीन साफ होती है, उसमें तो फल फूल पैदा होते हैं। जिस जमीन के नीचे गन्दगी बैठी हो ना, उस पर जब बारिश पड़ती है तो भड़ास निकलती है, बदबू निकलती है। तो यह साथ-साथ हमेशा ही सामान रहता है।

गुरु नानक साहब थे। जिनकी आँख खुली, वह कहते थे कि यह परमात्मा चलते फिरते हैं। जिनकी नहीं खुली, वह कहते थे यह कुराहिया है। हमारे पेट की रोजी मारते हैं। वह तो साफ कहते हैं, भई कर्म से चलो ऊपर। जब तक जिसम जिसमानियत में हो, यह करो। मगर यह करके, पराविद्या से तुम्हारी मुक्ति है। चलो ऊपर। वह Direct यह कहते हैं। अब जो

कर्मों-धर्मों में दुनिया को फंसाकर पेट पूजा कर रहे हैं, वह तो डंडा लेकर गिर्द होंगे ही अवश्य। और कई बार यह भी जब महात्मा देखते हैं ना, कि बहुत लोग, मक्खिया इकट्ठी हो गई, जो मुतलाशी (जिज्ञासु) हैं, उनका अकाज न हो, तो कोई ऐसा सामान भी पैदा कर लेते हैं जिससे वह मक्खियां हट जायें।

कबीर साहब थे। गणिका, पीछे महात्मा बन गई ना, उनको साथ लिया। दो बोतलें हाथ में पकड़ ली पानी की भर कर। नशेबाज बन कर बाजार से गुजरने लगे। बादशाह के गुरु थे। लोगों ने कहा, वाह भई ! गुरुयाई खुल गई। बस यही होते हैं। देखो क्या कर रहे हैं ! अब बादशाह का दिल भी डांवाडोल हो गया। वहां जा पहुंचे। उनके सामने दोनों बोतलें शराब की, अपने पांव पर गिरा दी। बादशाह ने कहा भई शराबी एक कतरा शराब का नहीं गिरने देता। कहने लगा, महाराज क्या बात है ? वह साथ वाले बैठे थे लोग जो, कहने लगे अन्धा है। कबीर साहब कहने लगे, फलानी जगह आग लगी है, उसको बुझा रहे हैं। उन्होंने आदमी भेजे, वहां Verify (प्रमाणित) हुआ कि हां उस समय कबीर वहां थे और आग बुझा रहे थे। ऐसे ही और कई सामान बन जाते हैं। कहते हैं, अपनी आंखों से काम लो। याद रखो, जब किसी अनुभवी पुरुष का सुनो ना, लोगों की सुनी सुनाई पर मत जाओ। हो सकता है उसमें उनको कुछ अपनी जाती गर्ज छुपी हो। Go and see for your own self दूसरों की आंखों के देखे पर और कानों के सुने पर एतबार करोगे तो तुम मारे जाओगे। बहक जाओगे। जो सुनेगा वह बहक जायेगा। जो दूसरों की दृष्टि से देखेगा वह कहीं का नहीं रहेगा। पीछे पछता कर जब आते हैं, ओहो हमारा जीवन बर्बाद हो गया। तो जहां कहीं भी महापुरूष का सुनो, कोई अच्छा कहे बुरा कहे, जाओ। See for your own self. हकीकत कुछ और होगी, गर्जमन्द लोग उसका प्रापेगन्डा और करेंगे। नतीजा ? हमारी गुमराही का सामान बनेगा।

निन्दा चौकीदार बिठाई, कोई जीव धंसने नहीं पाई ।
बिरला जीव होय अनुरागी, निन्दा से वह छिन छिन भागी ।

तो फरमाते हैं कि निन्दा एक किसम की यह चौकीदार बिठा लेते हैं, कि जो आम दुनिया की जो गुड़ की मक्खी है, व न आये सिर्फ जो सचमुच तलाश में हैं वहीं आयेंगे, वह ले जायेंगे।

निन्दा सुन सुन चित नहीं धारो, संतन की यह जुगति विचारो ।

कहते हैं निन्दा सुनकर यह बह न जाये। जाये, अपनी आंखों से देखे बात क्या है। आप देखेगा, कुछ और नजर आयेगा। दूसरे के सुने सुनाये पर जायेगा, बहक जायेगा। मुझे याद है एक बार, हजूर के वक्त का वाकिया है, एक मुसलमान भाई स्टेशन पर उतरा। दर्शन करने,

सत्संग सुनने आया था। उतरा। किसी ने कहा कहां उतरे हो, यहां तो बड़ा ठग बैठा है। क्या करते हो ? कहां हाथ आ गये ? कहते हैं, उसी वक्त मैंने ट्रेन पर सामान रखा, उसी वक्त चला गया। वह कई सालों के बाद फिर पहुंचा। ''जोईन्दा याबिन्दा।''मरता क्या न करता ! जब आकर सत्संग सुना हजूर का तो उठकर कहा, जी मुझे इजाजत हो, मैं कुछ कहूं ! कहने लगे हां कहो। कहने लगा, मैं एक बार, चार साल हुए, आया था। यह बचन किसी के मेरे कानों में पड़े, अरे भई यहां तो ठग बैठा है। क्या कहते हो ? कहता है, अगर उन बचनों को मैं नहीं सुनता तो चार साल पहिले मैं इस दौलत को पा लेता। तो किसी के सुनने पर मत जाओ। अपने कानों से सुनो, देखो क्या है। तुम भी तो दो रोटी खाते हो आखिर !

जस जाने तस मन समझावे, सन्तन सन्मुख त्यों त्यों आवे ।

कहते हैं, मन को समझा कर जाओ। सामने बैठो। आंख आंख से कुछ और मिलेगा। समझे। अपने कानों का सुना, अपनी आंखों का देखा, कुछ और तुम्हारे दिल दिमाग में बैठेगा। उस मण्डल का असर होगा। जाओ तो सही, देखो क्या मिलता है।

ऐसी दृढ़ता जाके होई, तो फिर सन्त मौज करे सोई ।

कहते हैं इतने दृढ़ आदमी को देख कर वह कहते हैं, अच्छा भई आओ। तवज्जो दे देते हैं, जाओ भई तेरा काम हो जाय।

सन्त मौज फिर कोई न टारे, ईश्वर परमेश्वर सब हारे ।

कहते हैं सन्त Mouthpiece of God (प्रभु में अभेद) है। जो Lower powers है फिर बीच में Stand नहीं करती, दिनों दिन बखशिश होती है। मुझे याद है, पिशावर का वाकिया है। वहां पर बाबा काहन थे। बड़े मस्त फ़कीर वह थे। उन्नीस सौ चौदह का जिकर है। तलाश तो थी ना ! एक भाई मेरे पास थे। मैंने उनको कहा भई इसके पास कुछ है सही। मस्त है फकीर, मगर इससे मिलेगा नहीं। यह बाटा अखरोट है। जो मस्त फकीर होते हैं, उनसे आम लोग नहीं फायदा उठा सकते। कोई-कोई उठा सकता है। मगर जो गुरुमुख हैं, उनसे हजारों फायदा उठा जाते हैं। कहने लगे फिर क्या करें ? मैंने कहा, इसके पास रात को जा बैठो। उसको गालियाँ निकाली। उठकर आ गया। दूसरे दिन मिला, मैंने कहा क्यों भई ? कहने लगा उसने गालियां निकाली हैं। मैंने कहा यह गालियां निकालना इस बात का सबूत है कि इसके पास है कुछ। फिर जाओ। दूसरे दिन फिर गए। फिर उसके ऊपर चढ़कर दो चार मुक्के मारे। फिर तीसरे दिन मिले, क्यों भई क्या देखा ? कहने लगे, आज तो भई गालियां भी निकाली, दो-चार मुक्के भी लगाए। मैंने कहा फिकर न करो। है कुछ बात। फिर जाओ। फिर गए। उस

रात वह जो गए तो उन्होंने क्या किया, वहां लकड़ी जल रही थी। वह नंगे-धड़ंग पड़े रहते थे। नंगे हैं तो नंगे ही हैं। पखाना फिरा है तो फिरा है। देहध्यास नहीं था उनको। क्या किया, उसको लकड़ी जलती मारी, जख्मी कर दिया। फिर भी बैठा रहा। रात के बारह बज गए। फिर कहा चाहते क्या हो ? कहने लगे, बाबा कुछ दे ! कहते हैं, देख कैसे प्रणव की ध्वनि आ रही है ! तो मस्त फ़कीरों के पास भी यह दौलत होती है। मगर उनसे फायदा आम लोग नहीं उठाते। गुरुमुख देता है। उनसे हजारों लोग, सालिक से, हजारों लोग फायदा उठाते हैं। लाखों लोग उनसे फायदा उठाते हैं।

गुरुमुख कोट उधारदा दे नावें एक कणी ।

वह देखता है, भई यह दृढ़ है, पक्का है, अच्छा भई बैठ जाओ। लो।

सन्त डारिया बीज घट धरती जेही जींव के,
को अस समरथ होय जो जारे उस बीज को।

कहते हैं, किसी अनुभवी पुरुष का बीज डाला हुआ वह अटल है। कोई ऐसी ताकत नहीं जो उस बीज को जला दे। वह जरूर उगेगा।

कोई काल के माहिं वह बीजा अंकुर गहे,
जब-जब आवें सन्त अंकूरी उन संग रहे।

कहते हैं, जो बीज है, आखर फूटेगा। जब-जब सन्त आते हैं, एक सन्त बीज डाल गया, वह चला गया। They are the children of light एक बल्ब फ्यूज हो गया, दूसरा लग गया। एक माली आया, वह पौधे लगा गया। वह चला गया। दूसरे माली ने पानी देना है। उसने फूटना है अवश्य। वह बीज जा नहीं सकता, कहीं जाया नहीं हो सकता। कोई ताकत नहीं जो उसको जायल कर सके, क्योंकि उसकी Godhood में बैठा हुआ बीज बिठाया है उसने, उसको कौन टाल सकता है ?

वह सींचें निज पौधे होये भक्त यह पेड़ सम ।
फल लागे अतिशय सरस भोगे सतगुरु मेहर से।

कहते हैं, पानी मिलेगा। माली पानी दे, पौधे का दरख्त बन जायेगा। फल लगेंगे। कहते हैं, यह फल कब लगते हैं ? कहते हैं जब सतस्वरूप हस्ती की सोहबत संगत होगी। उसकी मेहर से काम होगा। तुम कमाई करो । और मेहर से और शौक बढ़ेगा, और कमाई करो और मेहर बढ़ेगी। दया से करनी, और करनी से दया। दोनों मिलकर तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा। तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा यह कह दो।

कारज कीन्हा पूर सन्त धूर हिरदे धरी,
सूर हुआ मन चूर तूर घट में परगट ।।

कि सन्तों की धूड़ी जब हिरदे में धरी, कहते हैं, अन्तर, उसका क्या नतीजा होगा ? अन्तर ज्योति प्रगट हो जायेगी। घट में, बाहर नहीं। आपकी Intellectual light (बुद्धि की ज्योति) नहीं, यह Natural कुदरती Light है। ज्योति स्वरूप प्रभु घट-घट में विराजमान हैं If you shut the ten doors of thy body you all see the light of heaven.

दस इन्द्रे कर राखे बास, तांके आत्मे होय परगास ।

अन्तर प्रगट हो जायेगा जो ज्योति स्वरूप है। उसको तुम देख सकते हो मगर किन आंखों से ? दिव्य चक्षु से। भगवान कृष्णजी ने फर्माया तुम मुझको इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते, बल्कि दिव्य चक्षु से जो मैंने तुमको बख्शी हैं। यही गुरु नानक ने फर्माया है -

नानक से अखियां बेअन जिन डिसन्डो मापरी ।

वह आँखें और हैं, जिनसे वह नजर आता है। यह है सन्तों का उपदेश, सब महापुरुषों का। सब महापुरुष जो आये, उनका यही काम रहा कि जो आत्मायें दुनिया में मन इन्द्रियों के घाट में, दुनिया में, लम्पट हो रही हैं, इनको इधर से छुड़ाकर प्रभु के साथ जोड़ना मनुष्य जीवन ही में यह हम काम कर सकते हैं। मनुष्य जीवन बड़े भागो से मिलता है। ❑

रूहानी सत्संग निःशुल्क भेजे जाते हैं

Ruhani Satsangs are sent Free of Cost

Please Contact :

KIRPAL SEWASHRAM

Plot 5-A, IDA Scheme 71-C

INDORE - 452 009 (M.P.)

पिया तेरे मिलन दे कारण

सावन तेरा नहीं कोई सानी । ढूंढया मैं वी दो जहानी ।
इतना नाज नहीं कराई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

असां मिलना है जरूर । लैनी तेरे चरणां दी धूड़
परे दूर नहीं हटाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

दुनिया सारी होई कूड़ । होई हां तेरे इश्क विच चूर
मुखड़ा सोहना नहीं छुपाईदा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

लाह के लाज लोक दी सारी । होई तेरे दर दी सवाली
गुस्सा मन नहीं हंडाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

तेरेयाँ चश्माँ दी हाँ मारी । सड़ां विच विछोड़े भारी
इतनी देर नहीं लगाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

दूरों चल आई दर तेरे । पावां जोगन वाले फेरे
नजर मेहर दी चा पाईदा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

भांवें चंगी भांवें मन्दी । मैं ताँ दर तेरे दी बन्दी
दरों दूर नहीं दुरकारी दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

गले लग मेरे तूं आके । सोहनी अपनी छब वखाके
अपने बिरद नूं संभाली दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

जल्वा नयनाँ दा चमका के । रंगीली टोर अपनी दिखलाके
मेरे अन्दर ठन्ड पाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

नां जा दूर हुन तूँ नस के । वेखीं मेरे वल हस हस के
डेरे मेरे अन्दर लाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

घरां बारां नूं अग लावां । साक सैन सबे ते जावाँ
अलखाँ दर तेरे ते जगाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

आजा सावन मीत प्यारे । जिन्द ते जान तेरे तों वारे
मेरे तन मन विच वसाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

तूं तूं करदी तूं हो जावां । होर न दूजी नजरी आवां
परदा दुई दा मिटाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

तेरेयां नाजां लुट खड़ेया । इल्म अकल दा झुग्गा सड़ेया
सोहनी अपनी छब वखाईदा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

तैनूं वेख वेख पई जीवां । जख्म जुदाई दे पई सीवाँ
दिलों दूर नहीं कराई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

विच्छड़ तेरे तों मर जासां । नाकर दूर अपनेयां दासां
हाड़े डाहडे नहीं कढाई दा । पिया तेरे मिलन दे कारण.....

तेरे प्रेम की जिसको लगी है लगन

तेरे प्रेम की जिसको लगी है लगन ।
तेरे दरस का जिसको ध्यान हुआ ॥

तेरी याद में तन मन वार गया ।
तेरे प्रेम ही में बलिदान हुआ ॥

देखी जिसने पिता तेरी थोड़ी झलक ।
ऐसा मोहित हुआ अपनी सुध न रही ॥

देखा जिसको भी उसने आँख उठा ।
तेरी महिमा का उसमें गुमान हुआ ॥